मंगल संदेश

वर्ष 17 अंक 8
8, नवम्बर 1989

सम्पादक—रामावतार गुप्त

आजीवन शुल्क : 200 रुपये
वार्षिक शुल्क : 20 रुपये

कविवर दुलीचन्द 'शशि'

कविता-रचना विशेषांक

आजीवन सदस्यों की सूची

(गतांक से आगे)

1243. श्री लक्ष्मीचन्द अग्रवाल,
एच-255, विकासपुरी,
दिल्ली-110058

1244. श्री राधेश्याम पटवाड़ी,
51-अंगद नगर एक्सटेंशन,
लक्ष्मी नगर,
दिल्ली-110092

1245. श्री रोशन लाल,
49, बी० डी० इस्टेट,
लखनऊ रोड, तिमारपुर,
दिल्ली-110006

1246. श्री श्रीचंद गर्ग,
सी-41, ग्रेटर कैलाश-एक,
नई दिल्ली-110048

1247. श्री निरंजनलाल अग्रवाल,
ई-125, कमला नगर,
दिल्ली-110007

1248. श्री सतीशकुमार सिंहल,
2248, तिलक बाजार,
खारी बावली,
दिल्ली-110006

1249. श्री राजेन्द्रप्रसाद गुप्ता,
बी-454, न्यू फ्रैन्ड्स कालोनी,
नई दिल्ली-110065

1250 श्री केदारनाथ मित्तल,
बी-15, सी०सी० कालोनी,
दिल्ली-110007

1251. श्री बिशनदयाल गोयल,
231, विवेकानंदपुरी,
दिल्ली-110007

1252. Shri Jai Prakash Goel,
New Star Road,
Cochin-2 (Kerala)

1253. श्री आनन्दकुमार,
शरबती सदन,
6-टीचर्स कालोनी,
बुलन्दशहर (उ०प्र०)

1254. श्री सुरेशचंद गुप्त,
एन-18, ग्रीनपार्क एक्सटेंशन,
नई दिल्ली-110016

1255. श्री लखमीचंद गुप्ता,
17/6, युसुफ सराय,
नई दिल्ली-110016

1256. श्री रामकुमार गोयल,
के० पी०-109, मौर्य एन्क्लेव,
पीतमपुरा,
दिल्ली-110034

1257. श्री गुलजारी लाल अग्रवाल,
डी-278, विवेक विहार,
दिल्ली-110095

1258. श्री लालचंद सरावगी,
डी-257, विवेक विहार,
दिल्ली-110095

1259. श्री छन्नुमल अग्रवाल,
बी-92, विवेक विहार,
दिल्ली-110095

1260. श्री जगदीशराय गुप्ता,
ए-65, विवेक विहार,
दिल्ली-110095

1261. श्री नथमल महनसरिया,
ए-38-ए, विवेक विहार,
दिल्ली-110095

1262. श्री विश्वबंधु अग्रवाल,
पी-74, साउथ एक्सटेंशन-दो,
नई दिल्ली-110049

1263. श्री भीमराज अग्रवाल,
3364, क्रिश्चयन कालोनी,
करोल बाग,
नई दिल्ली-110005

1264. श्री प्रेमराज गुप्ता,
बी-1544, शास्त्री नगर,
दिल्ली-110052

1265. श्री कैलाश चन्द्र गुप्ता,
3 सी/3, गुरु गोविंद सिंह मार्ग,
दिल्ली-110005

1266. श्री भगवानदास गुप्ता,
5 सी/79, गुरु गोविंदसिंह मार्ग,
दिल्ली-110005

कवि का आत्मकथ्य

विगत दिनों श्री रामेश्वरदास गुप्त एवं श्री बालकृष्ण गोयन्का अ० भा० अग्रवाल सम्मेलन तथा अग्रोहा विकास ट्रस्ट के संदर्भ में हैदराबाद पधारे थे। श्री आर० ए० अग्रवाल ने श्री रामस्वरूप अग्रवाल के माध्यम से मुझे संदेश भिजवाया कि श्री गुप्ताजी ने आपको याद किया है। गुप्ताजी श्री बालकृष्णजी गोयन्का के सुपुत्र श्री ओमप्रकाश जी के बंजारा हिल्स स्थित आवास गृह पर ठहरे थे। मैं मध्यान्ह 12 बजे गुप्ताजी से मिलने पहुँचा। लगभग 2-3 घंटे मैंने गुप्ताजी के सान्निध्य में बिताये, इस बीच अनेक प्रकार की सामाजिक, साहित्यिक चर्चायें उनके साथ हुईं, तब मैंने उनसे आग्रह किया था कि अग्रसेन, अग्रोहा, अग्रवाल विषयक मेरी काव्य रचनायें किसी प्रकार एक स्थान पर आ सकें तो इससे समाज का लाभ होगा। मैं स्वयं उन्हें पुस्तकाकार रूप में प्रकाशित करा सकूं यह मेरे सामर्थ्य की बात नहीं है। गुप्ताजी ने इस सन्दर्भ में विचार-विमर्श कर कहा कि मैं 'मंगल-मिलन' में प्रतिमास आपकी कुछ काव्य रचनायें नियमित छाप सकता हूँ, जिन्हें आप पुस्तक के रूप में संकलित कर सकते हैं। तब यह बात यहीं समाप्त हो गयी।

4 जुलाई 1989 का गुप्ताजी का एक पत्र मुझे तब मिला, जब मैं उच्च रक्तचाप के कारण हरिप्रसाद मेमोरियल अस्पताल में भरती था, गुप्ताजी ने पत्र में लिखा था कि मैं आपकी अग्रसेन, अग्रोहा, अग्रवाल विषयक रचानायें 'मंगल-मिलन' के सितम्बर अंक में प्रकाशित कर दूँगा और उस अंक का नाम दुलीचन्द 'शशि' कविता विशेषांक रख दूंगा।

मैं गुप्ताजी के उक्त पत्र पर अस्वस्थता के कारण शीघ्र कोई निर्णय ले पाने में असमर्थ रहा, इस कारण पत्र का उत्तर भी नहीं भेज पाया, कि गुप्ताजी का 31 जुलाई का दूसरा पत्र उक्त सन्दर्भ में मुझे मिला, तब मैंने उक्त विषयक अपनी काव्य-रचनायें एकत्रित की और उन्हें भेज पाया।

यह श्री गुप्ताजी का मुझ पर असीम स्नेह रहा, जो उन्होंने एक कवि का दर्द और उसकी आवश्यकता को एक साथ महसूसा, ऐसी अनुभूति काव्य का मर्म समझने वाले व्यक्ति में ही हो सकती है।

अग्रसेन, अग्रोहा, अग्रवाल सन्दर्भित मेरी बहुत सी रचनायें दीमकें चटकर गयीं, जितनी बचीं, और समय को दृष्टि में रख कर जितनी मैं समेट पाया, उनमें अग्रसेन, अग्रोहा, विषयक तथा अग्रवंश को उत्प्रेरित करने वाली उनके मानस को झकझोरने वाली तथा उजाड़ पड़ी, अपनी मातृभूमि को पुनः बसाने की प्रेरणा देने वाली रचनायें हैं। जिनमें से अधिकांश कश्मीर से कन्याकुमारी तथा गौहाटी से चौपाटी तक प्रकाशित होने वाली पत्र-पत्रिकाओं में तथा अग्रसेन जयन्ती एवं विशेष अवसरों पर प्रकाशित होने वाली संस्मारिकाओं से प्रकाशित हो चुकी हैं। इस पत्र के पाठकों ने भी मेरी रचनायें पढ़ी होंगी।

देश में अनेकों स्थानों पर 'जय अग्रसेन, जय अग्रसेन' जैसी मेरी गेय रचना से अग्रसेन जयन्ती महोत्सव का शुभारम्भ होता है। कई स्थानों पर 'अग्रवीरो जयन्ती मनाने चलो, गीत जयन्ती पर्व पर आयोजित प्रभातफेरियों में गाया जाता है। जब-तब, यहाँ-वहाँ प्रकाशित होने वाली मेरी काव्य रचनाओं पर पाठकों के अनेकों प्रशंसा पत्र मुझ तक पहुँचे हैं, जिनके बलबूते पर मेरी इस रचना प्रक्रिया को प्रोत्साहन मिला है। इससे जहाँ मुझे आत्म संतुष्टि मिली, वहीं मैंने अपने आपको गौरवान्वित महसूस किया है। सम्पन्न लोग समाज सेवा हेतु धन का सहयोग देकर जितना आनन्द महसूस करते हैं, समाज के लिए इन रचनाओं को शब्द देकर उतना ही सुख मैंने महसूसा है। अग्रोहा पुनः बसाने के लिए विगत दो दशकों से मैं सन्दर्भित रचनायें लिखता रहा हूँ। जिन लोगों के भगीरथ प्रयासों से अग्रोहा का पुनरुत्थान हो रहा है अग्रोहा भव्य निर्माण देख कर उन्हें जितना आत्म-सन्तोष हो रहा होगा, उतना ही अच्छा मुझे भी लग रहा है।

मेरे नाम से 'मंगल-मिलन' का विशेषांक प्रकाशित कर जो गरिमा श्री रामेश्वरदासजी मुझे प्रदान कर रहे हैं उसके लिए मैं अन्तर्मन से उनका आभारी हूँ।

—दुलीचन्द 'शशि'

कविवर दुलीचन्द 'शशि'

एक दृष्टि में

श्री दुलीचन्द 'शशि' का जन्म 3 दिसम्बर 1929 को उज्जैन में श्री दुर्गाप्रसाद चौधरी के संभ्रान्त घराने में हुआ। शिक्षा-दीक्षा पूर्वजों के मूल स्थान जयपुर जनपद के अन्तर्गत ग्राम प्रागपुरा (पावटा) में हुई। जीवनोपार्जन के लिए आपने उज्जैन के विनोद मिल्स में नौकरी की और शीघ्र ही मजदूर नेता के रूप में उभरने लगे। तत्पश्चात् शशिजी व्यवसाय हेतु हैदराबाद पहुँचे, वहाँ पन्द्रह वर्षों तक आप राशनिंग एवं अनाज के व्यवसाय से सन्निद्ध रहे, मगर फ़कीराना अन्दाज, शायराना तबियत और अपनी भावुकता तथा संवेदनशीलता के कारण आप न सफल व्यवसायी बन सके और न ही आगे व्यवसाय से जुड़े रह सके।

1961 में आपने श्री अग्रसेन जयन्ती महोत्सव समिति की स्थापना की, जो आगे चल कर श्री अग्रसेन समिति के नाम से जानी जाने लगी। नगर में अग्रवालों की एक मात्र सामाजिक संस्था के संस्थापक संयोजक होने का गौरव शशिजी को उपलब्ध रहा है।

1963 से आपने 'अग्रवाल समाज' मासिक पत्रिका का प्रकाशन प्रारम्भ किया और अनेकों अवरोधों और बाधाओं के उपरान्त भी निरन्तर 20 वर्षों तक उसे मासिक पत्र के रूप में चलाते रहे। 1984 से यह पत्र वार्षिकी के रूप में प्रकाशित हो रहा है।

1946 से शशिजी काव्य का निरंतर सृजन करते आ रहे हैं। अँग्रेजों के खिलाफ गेय कविताएँ लिखकर जहाँ शशिजी ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम को योगदान दिया है वहीं स्वाधीनता के पश्चात् भारत-चीन, भारत-पाक एवं भारत-बांगला देश युद्धों के समय सम-सामयिक उद्‌बोधक रचनाओं का सृजन कर जनता और सैनिकों का मनोबल बढ़ाया है। गोआ मुक्ति संग्राम के अवसर पर आपकी एक पुस्तिका 'गोआ के गीत' के नाम से प्रकाशित हुई, जिसमें छपे गेय गीतों को गोआ जाने वाले सत्याग्रही जत्थों ने अपने अभियान में प्रयोग किया है।

शशिजी ने जिन समाजोपयोगी रचनाओं का सृजन किया है, उनमें से सबसे पहली रचना 1948 में दिल्ली से श्री भद्रसेन गुप्त के सौम्य सम्पादन में प्रकाशित मासिक पत्र 'अग्रवाल' में प्रकाशित हुई है। श्री गुप्तजी तब एक और मासिक पत्र 'संजय' भी दिल्ली से निकालते रहे। शशिजी जहाँ देश और समाज के लिए काव्य सृजन करते रहे, वहीं उन्होंने प्रणय, श्रृंगार, विरह, दर्द और पीड़ा के गीत और गज़लें भी हजारों की संख्या में लिखी हैं।

पाठकों का दुर्भाग्य या शशिजी का, निरन्तर 43 वर्षों से काव्य-साधना में लीन शशिजी का कोई काव्य-संग्रह अब तक प्रकाशित नहीं हो सका। वैसे यह अग्रवाल समाज का भी दुर्भाग्य कहा जायगा, कि उसने अपनी जेब में पड़े हीरे की परख नहीं की।

वैसे शशिजी की रचनायें देश से प्रकाशित होने वाले 300 के लगभग दैनिक, पाक्षिक, साप्ताहिक तथा मासिक पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुकी हैं। समय-समय पर आकाशवाणी और दूरदर्शन से आपके गीत प्रसारित एवं परिलक्षित होते रहे हैं।

अग्रसेन जयन्ती पर समग्र देश से प्रकाशित होने वाली संस्मारिकाओं में आपकी अग्रसेन, अग्रोहा, अग्रवाल काव्य-रचनायें स्थान पाती रही हैं। अग्रोहा निर्माण से पूर्व विगत 25 वर्षों से अग्रोहा बसाने हेतु आप अपनी उद्‌बोधक कविताओं से अग्रवालों के मन को झिझोड़ते रहे हैं।

सम्प्रति शशिजी के प्रथम काव्य-संग्रह 'पंख बोझिल और गीले' का विमोचन हैदराबाद में कवियों की संस्था गीत चांदनी की सातवीं वर्षगांठ पर शरद पूर्णिमा 14 अक्टूबर 1989 को कुली कुतुब शाह स्टेडियम में आयोजित अखिल भारतीय कवि सम्मेलन के मंच पर सम्पन्न हुआ है। इलाहाबाद के अनुराग प्रकाशन ने इस काव्य संग्रह को प्रकाशित किया है। शशिजी के पास 50 के लगभग पाण्डुलिपियां क्रम से तैयार हैं, जिन्हें प्रकाशित करने की आवश्यकता है।

दिल्ली से विगत 17 वर्षों से निरन्तर प्रकाशित होने वाले मासिक पत्र 'मंगल-मिलन' ने आपकी सैंकड़ों सामाजिक काव्य रचनाओं में से 55 रचनाओं को अपने 'कविवर दुलीचन्द शशि' कविता रचना विशेषांक में विशेष रूप से स्थान दिया है।

शशिजी चाहे मिल में कार्यरत रहे हों, चाहे अपने किसी व्यवसाय से सन्नद्ध रहे हों या पत्रकारिता के क्षेत्र में कार्यरत रहे हों, वे हर क्षण कवि रहे हैं और अपनी रचनाधर्मिता का निर्वाह करते आये हैं।

शशिजी हैदराबाद नगर में अग्रवालों की एक मात्र प्रतिनिधि संस्था श्री अग्रसेन समिति के संस्थापक संयोजक रहे हैं। निज़ामाबाद में आपकी प्रेरणा से श्री अग्रसेन समिति निज़ामाबाद की स्थापना हुई है। धन-जन सम्पन्न अग्रवाल समाज यदि शशिजी के बारे में सोचेगा, समझेगा, गौर करेगा तो गौरव उसका ही बढ़ेगा।

—रामावतार गुप्त

जय अग्रसेन !

जय अग्रसेन !

जय अग्रसेन, जय अग्रसेन
जय गौरव गरिमा के निशान
जय-जय समता के स्वाभिमान
जय प्रखर-ज्योति के उन्नायक
जय-जय करुणा के कीर्तिमान

हो गये सभी वे श्रद्धानत,
जिस-जिस के तुम पर उठे नयन
जय अग्रसेन, जय अग्रसेन

तुमने सबको सुख दान दिया
शासन का मंत्र महान दिया
संस्कृति की पूजा की तुमने
शासक का सबल प्रमाण दिया

हर पीड़ित को अनुराग दिया
सुख-समता तेरी अमर देन
जय अग्रसेन, जय अग्रसेन

इतिहास गवाही देता है
तेरे उन पुण्य प्रतापों की
लक्ष्मी का चिर वरदान मिला
तब सांस रुकी संतापों की

सबके समान ही होते थे
तेरे शासन में दिवस रैन
जय अग्रसेन, जय अग्रसेन

हिंसा को देश निकाला दे
प्राणी-प्राणी को प्यार दिया
जन-जन को इतनी गरिमा दी
हर उर में नेह उतार दिया

धरती से लेकर अम्बर तक
शाश्वत हैं तेरे अमर बैन
जय अग्रसेन, जय अग्रसेन

जय अग्रोहा

जय रिद्धि सिद्धि परिपूर्ण धरा, रज कण में अनुपम शौर्य भरा
कितनी महिमा मय कथा तेरी, तूने जन-जन में सौख्य भरा
स्वजनों को कितना प्यार दिया, तूने जन-जन का मन मोहा।
जय अग्रोहा जय अग्रोहा।

समता का आंचल भरा सदा, अभ्यागत को अधिमान दिया
सुख-सौरभ सबके साथ रहे, आदर्शों को गतिमान किया
तेरी क्षमता को देख-देख, दुश्मन तक मान गये लोहा।
जय अग्रोहा जय अग्रोहा।

जितना खोजें जितना ढूंढ़े, समता की झांकी निखरेगी
माटी को तनिक उलीचो तो, गर्वोन्नत कुंकुम बिखरेगी
हे धन्य धरा, हे धन्य ग्राम, और धन्य नाम है अग्रोहा।
जय अग्रोहा जय अग्रोहा।

सब किंवदंतियों ने तेरी महिमा को सुयश प्रदान किया
तेरे आंचल की छाया में, जो जिया आन के साथ जिया
तूने समता को तिलक किया, सब भाट गा रहे ये दोहा।
जय अग्रोहा जय अग्रोहा।

अग्रसेन

वह कौन कहो जिसने जन-मन को एक नया अभिमान दिया,
वह कौन कहो अग्रोहा को जिसने नवरूप प्रदान किया।
वह कौन कहो जिसने समता का नव-आलोक बिखेरा था,
वह कौन कहो जो लोकतन्त्र का अद्‌भुत रंग चितेरा था।
जो साम्य योग का अधिनायक सुख समता जिसकी अमर देन,
वह अग्रसेन वह अग्रसेन।

अग्रोहा

वह कौन ग्राम जहाँ बन्धु भावना बढ़ी पली परवान चढ़ी,
वह कौन ग्राम कवियों ने जिसकी गौरव गाथा खूब गढ़ी।
वह कौन धरा जिसके आंचल में पौरुष खुल कर खेला था,
वह कौन धरा जिसकी रज कण में सुख-समता का मेला था।
वह कौन ग्राम जिसकी गरिमा ने अभ्यागत का मन मोहा,
वह अग्रोहा वह अग्रोहा।

अग्रवाल

वह कौन कहो जो अग्रसेन की वाणी समझ नहीं पाए,
वह कौन कहो जो प्यार परस्पर अब तक बांट नहीं पाए।
वह कौन कहो जिसके बस में धन जन की ताकत बहुत बढ़ी,
वह कौन कहो है जन्मभूमि जिसकी अब तक वीरान पड़ी।
वे अग्रसेन की प्रतिमा पर हर वर्ष चढ़ाते फूल माल,
वह अग्रवाल, वह अग्रवाल।

हे अग्रसेन
नृपवर महान्

तुम नृप बल्लभ के सुखद सुवन
तुम आदर्शों के परियायी
तुम साधक सत्य-अहिंसा के
तुम कर्मठता की तरुणायी
तुम शौर्य-पराक्रम की प्रतिमा
तुम क्षमता के गर्वित-वितान
हे अग्रसेन नृपवर महान्

तुम हो समता के सौम्य-रूप
तुम सम्ययोग के शिल्पकार
तुम मानवता के महामंत्र
तुम जन-गण, मनके मधुरप्यार
तुम करुणा के पावन प्रतीक
तुम सुख-समता के अमर गान
हे अग्रसेन ऋषिवर महान्

तुम कर्त्तव्यों की वज्रधरा
तुम विश्वासों के विशद गगन
तुम रौद्र रूप बलिदानों के
तुम उत्थानों के नए-सृजन
तुम वरदानों के वरद-हस्त
तुम निष्ठा के उज्ज्वल प्रमाण
हे अग्रसेन योगी महान्

तुम सघन तपस्या के तपसी
तुम शासक सौम्य सदाव्रत के
तुम हो पौरुष के भीष्मपिता
तुम आश्रम स्वयं सदाकत के
तुम गौरव-गर्वी उच्च-शृंग
तुम उत्कर्षों के कीर्तिमान
हे अग्रसेन करुणा-निधान

तुम सिद्धान्तों के मौन-व्रती
तुम रिद्धि-सिद्धियों के दाता
जीवन दर्शन की दिव्य-दृष्टि
तुम संस्कृति के जीवन-दाता
तुम संकल्पों के दीर्घ-सूत्र
तुम असहायों के अभय-दान
हे अग्रसेन मुनिवर महान्

तुम चिन्तन के अभिनव स्वरूप
तुम सम्मोहन की सहज-वृत्ति
तुम पराकाष्ठा वैभव की
तुम अभिलेखों की ठीस-भित्ति
तुम गरिमाओं के महासृजन
तुम न्याय-नीति के महाप्राण
हे अग्रसेन याज्ञिक महान्

तुम संस्कृति के आलोक-मुखर
तुम सम्प्रेषण सद्भावों के
तुम समता के आधार-बिन्दु
तुम संबल शिथिल शिराओं के
तुम प्रबल क्रांति के उत्प्रेरक
तुम संस्कारों के विधि-विधान
हे अग्रसेन गर्वित महान्

तुम आशीषों की सुखद-वृष्टि
तुम अमर कृति आख्यानों की
तुम उपदेशों की पृष्ठभूमि
तुम महिमा महा-प्रयाणों की
तुम कौशल कुशल कलाकृति के
तुम प्रभापुंज देदीव्य मान
हे अग्रसेन प्रज्ञा—प्रधान

हे अग्रवंश के पुन्यधाम
है नमन तुम्हें हे आदिग्राम

तेरी गोदी में संस्कृतियां
कितनी पनपीं, परवान चढ़ीं
तेरी माटी से गौरव की
कितनी गाथाएं गयी गढ़ीं।
तेरा आँचल आदर्शवाद की
उपमाओं से भरा पड़ा
दे रही गवाही गरिमा की
सतियों की अब तक बनी मढ़ीं
हे अग्रवंश के पुन्य धाम।
है नमन तुम्हे हे आदिग्राम ।।

तेरे अंचल से प्यार और
अपनत्व लुटाया जाता था
हर पीड़ित जन तेरे आँगन में
गले लगाया जाता था
सच्चे समाजवादी प्रसून
तेरी माटी में निपजे थे
मानव, मानव को बन्धु भाव का
सबक पढ़ाया जाता था
गौरव-गरिमा मण्डित ललाम।
है नमन तुम्हे हे आदिग्राम ।।

तेरी गोदी में संस्कृतियां
प्रत्यक्ष दिखायी देती हैं
इतिहास और जन-श्रुतियों की
आवाज सुनाई देती है
तेरे आंगन में इठलाती
सुख-समता की भीनी सुगन्ध
उस पूर्व पुरातन गरिमा की
हर बार दुहाई देती है
हे अग्रसेन के कीर्तिधाम।
है नमन तुम्हे हे आदिग्राम ।।

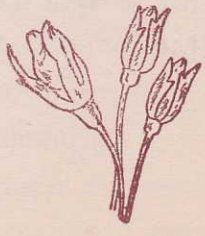

हे अग्रसेन जी नाम तुम्हारा
गंगाजल-सा पावन है

हे अग्रसेन जी नाम तुम्हारा
गंगाजल - सा पावन है
जन-जन के मन में श्रद्धा कण
उमड़ाने वाला सावन है

तुम थे गौरव की पृष्ठ भूमि
थे राज-काज में बहुत दक्ष
थे स्वयं सत्य के दृढ़ प्रतीक
तुम बलिदानों के प्रबल पक्ष

तुम शौर्य-पराक्रम की गरिमा
क्षमता के तुम इतिहास नए
तुम सुख-समता के प्रथम स्त्रोत
तुम संस्कृति के मधुमास नए

ममता की मोहक मूरत तुम
समता के सौम्य सृजग तुम थे
तुम थे करुणा के स्पन्दन
उत्कर्षों के प्रेरक तुम थे

तुम आदर्शों के दृढ़ स्वरूप
तुम सुषमा नए विहानों की
निर्बल के बल निर्धन के धन
तुम महाशक्ति अभियानों की

तुम कर्तव्यों के उत्प्रेरक
जय और विजय की सौम्यकथा
तुम सद्भावों के उन्नायक
तुम पीड़ित-जनकी मौन-व्यथा

तुम सर्जक नए विप्लवों के
तुम महाव्रती कर्मठता के
तुम मानवता के महाप्राण
आविष्कारक सुख-समता के

तुम उद्बोधन के बोध सुखद
तुम पावनता की अमराई
तुम दिशा-बोध सन्मतियों के
तुम सम्वेदन की गहराई

तुम निश्छलता के परमधाम
तुम सद्भावों के अनुयायी
तुम झाँकी सौम्य सनातन की
तुम दृढ़ क्षमता के पर्यायी

अग्रसेन की जन्म जयन्ती

अग्रसेन की जन्म जयन्ती ठौर ठौर उत्साह जुड़ा है।
पर समाज में धुन्ध पटा है, और धरातल घुटा-घुटा है॥

जश्न मनाने से पहले हम ढ़की छिपी कुछ परतें खोलें।
अग्रसेन की जय कहने से पहले अपने हृदय टटोलें॥

पिछले एक दशक में काफी अग्रसेन का शोर हुआ है।
पर समाज भीतर ही भीतर और कहीं कमजोर हुआ है॥

अग्रसेन के आदर्शों को हमने कितना स्वीकारा है।
पिछले एक दशक में हमने क्या जीता क्या हारा है॥

कहो समाज की आवाज़ों को अग्रबन्धु क्या सुन पाये हैं।
दिशाहीन से लगते अब तक, नहीं मार्ग तक चुन पाये हैं॥

नए दौर की नई चुनौती, कितनों ने स्वीकारी बढ़कर।
राजा और रजवाड़ों जैसे अभी विवाहों में आडम्बर॥

अभी शादियों में लक़दक़ है, अभी नृत्य करता है पैसा।
दहेज दिखाना ज्यों का त्यों है, सब कुछ है जैसे का वैसा॥

धनिकों और गरीबों में क्या, अन्तर थोड़ा पट पाया है।
ऊंच-नीच का भेद-भाव क्या बीच हमारे घट पाया है॥

अग्रसेन के आदर्शों को हमने कितना प्यार दिया है।
और समय के बदले मूल्यों को कितना स्वीकार किया है॥

क्यों न शादियाँ होती दिनमें, कहो रात ही क्यों सुखकर है।
सामूहिक शादी में शामिल होते कितने "ऊंचे" घर है॥

वह अग्रोहा जहाँ उलीचो मिट्टी तो इतिहास मिलेगा।
हमें हमारी पूर्व-पुरातन गरिमा का आभास मिलेगा॥

अग्रसेन का एक लाल यदि चाहे तो ताजमहल बन जाए।
सब मिलअपनी जन्मभूमि को जाने फिर क्यों बसा न पाए॥

अरे जहां की रजकण तक में गौरव की गरिमा पैठी है।
वह धरती मां क्यों उदास है, क्यों वह गुम-सुम सी बैठी है॥

धन-जन से सम्पन्न सपूतों में, जिसके है शक्ति निराली।
जिसने सुखऔर समता बांटी, उसमाँ का आँचलक्यों खाली॥

लोक तन्त्र का मंत्र दिया था, जिसने उसकी गाथा गाएं।
लेकिन उनके संदेशों को कार्य रूप में भी अपनाएं॥

अग्रसेन के वंशज, जिसकी अनुकम्पा से ऊंचे पहुंचे।
उसके पावन जन्म दिवस पर हम सब यह बातें भी सोचें॥

बदलते युग के परिवेश में एक सच बात

(1)
यह सत्य समय के शहजादे—
बन हमने कितने काम किए।
यह सत्य जाति-गंगा के हमने
झूम-झूम कर जाम पिए॥

(2)
यह सत्य, हमारी कीर्ति कभी
नीलाम्बर पर मुस्कायी थी।
यह सत्य हमारी गौरव-गाथा
कभी समय ने गायी थी॥

(3)
यह सत्य, विजय के तोते को
पिंजरे में पाला था हमने।
श्री अग्रसेन के पुण्यों का
आलोक उछाला था हमने॥

(4)
यह सत्य कभी अग्रोहे के
वैभव ने सुरभि उँडेली थी।
यह सत्य कभी यह अग्र जाति भी
तलवारों से भी खेली थी॥

(5)
यह सत्य, सती शीला के हैं
आदर्श आज भी विद्यमान।
हरभजनशाह की गौरव-गाथा
बसी आज भी हृदय-प्राण॥

(6)
नन्नूमल से दीवान पराक्रम—
अनुपम अपना छोड़ गए।
यह सत्य हमारे पूर्व-पुरुष
इतिहासों में यश जोड़ गए॥

(7)
यह सत्य, कभी हमने धन से
अन्तर की "खाई" पाटी थी।
अग्रोहे की धरती ने तब
गरिमा की कुंकुम बाँटी थी॥

(8)
पर—आज दौर, वह दौर कहाँ
नवयुग ने बिगुल बजाया है।
हम सब भी युग के साथ चलें
यह शोर उभर कर आया है॥

(9)
युग बदला, परिपाटी बदली
सिक्के के पहलू तक बदले।
हम अब तक युग के साथ-साथ
दो-चार कदम भी नहीं चले॥

(10)
अग्रोहा अभी उजाड़ पड़ा
जाति-गंगा है जीर-शीर्ण।
धनवान, गरीबों का भारी
अन्तर करता है उर-विदीर्ण॥

(11)
नवयुग की नई प्रभा में भी—
अब ब्याज कमाया जाता है।
और अभी मिलावट का धन्धा
परवान चढ़ाया जाता है॥

(12)
अग्र जाति के कई सुवन
बस रटते अभी पहाड़े हैं।
प्रचलित समाज में दहेज अभी
लालच ने झण्डे गाड़े हैं॥

(13)
यदि यही रही गति अपनी तो
फिर पड़े यहीं रह जाएंगें।
पश्चातापों की झंझा से
फिर कभी उबर नहीं पायेंगे॥

(14)
दो ध्यान समय की माँगों पर
सब लोगों से हिल मिल जाओ।
मेहनत का सिक्का चलता है
मेहनत से रोटी उपजाओ॥

(15)

महलों में रहने वाले सब
कुटियों का भी वन्दन कर लें।
लें साथ गरीबों को अपने
मन, गंगा-सा पावन कर लें॥

(16)

फिर देखो युग की तरुणायी
माथे पर चन्दन मल देगी।
यश-कीर्ति पगे से आँचल से
पुरवा खुद पंखा झल देगी॥

(17)

भैरवी, समय के साथ-साथ
हमको भी गानी ही होगी।
यदि आज नहीं तो कल हमको
समता अपनानी ही होगी॥

(18)

मजदूर-किसानों का युग है
श्रम का अर्चन करना होगा।
श्रम से करनी होगी यारी
श्रम का वन्दन करना होगा॥

(19)

हम जहाँ कहीं भी बस जायें
लोगों से हमको प्यार मिले।
अपनापन दें असमी-जन को
बंगाली से सत्कार मिले॥

(20)

महाराष्ट्र में बसने वालों को
हम अपना ही भाई मानें।
आन्ध्र और तेलागंना वासी
सबको अपना सा ही जानें॥

(21)

हर क्षेत्र हमारा अपना है
हम कहीं रहे हैं कोई गैर नहीं।
हम सबके अपने होते हैं
है हमें किसी से बैर नहीं॥

(22)

हम राजस्थान रहें चाहें,
केरल में हम जा बस जाएं।
हरियाना, यू० पी० जैसा है
वैसा कर्नाटक को पाएं॥

(23)

है नागालैंड हमारा घर
तमिलनाडु घर अपना है।
उत्कल, गुजरात, बिहार सभी
से बंधा हमारा सपना है॥

(24)

नागा, निर्वस्त्र रहेगा—तो
फिर "भारतेन्दु" नंगा होगा।
लक्ष्मी के दास बनेंगे तो
"रत्नाकर" भिखमंगा होगा॥

(25)

धन-जन संपन्न, सबल हैं हम
नारी यदि अपमानित होगी।
कुल गौरव की आराध्य देवि
सती शीला सन्तापित होगी॥

(26)

मजदूरों और मुनीमों को
नाहक हम अगर सतायेंगे।
"हरभजन शाह" से दानी को
हर ओर तड़पता पायेंगे॥

(27)

कर्त्तव्य-परायण की गरिमा
हाथों से छूट नहीं पाए।
सर शादीलाल की न्याय
तुला का ढारस टूट नहीं पाए॥

(28)

लाला लाजपत की गरिमा भी बस
देश शक्ति से पगी रहे।
तो राष्ट्र-प्रेम की दिव्य-ज्योति
अग्र जाति से जगी रहे॥

अग्रसेन के आदर्शों की पोथी पर क्यों धूल चढ़ी है !

अग्रसेन के संग अग्रोहा, फिर अग्रवाल यह एक कड़ी है
तीनों शब्दों में पहले "अ" अपने में यह बात बड़ी है
अग्रसेन की गौरव-गाथा से सारा इतिहास पटा है
अग्रोहा ने भी तो जग-जाहिर अपनी महिमा खूब गढ़ी है।

□

अब बारी है अग्रवाल की, प्रश्न सामने कई खड़े हैं
दो दशकों से शोर बहुत है, पर मंजिल तक कहाँ बढ़े हैं
कथनी और करनी का अन्तर कहो कभी हट पायेगा क्या
ऊँच-नीच का भेद परस्पर अपनों में घट पायेगा क्या।

□

अग्रसेन के आदर्शों की पोथी पर क्यों धूल चढ़ी है
समता की सीता बेचारी अभी सिसकती दूर खड़ी है
अभी दिलों में व्याप्त अंधेरा और स्वार्थपरता पैठी है
अग्रसेन की प्रतिमा हमने पूर्ण रूप से कहां गढ़ी है।

□

नवयुग ने आवाज लगायी आओ संग-संग कदम बढ़ाओ
अग्रसेन का मान बढ़ेगा, कर्तव्यों के फूल चढ़ाओ
सत्य-अहिंसा को अपना कर समभावों की ज्योति जगाओ
अग्रसेन की यश गाथा के ठौर-ठौर पर कलश सजाओ।

□

यदि कुछ करना है, समाज में साम्ययोग अपनाना होगा
राग-द्वेष के भाव हमेशा की खातिर दफ़नाना होगा
कुछ करने की अगर लालसा तो पहले वह शपथ उठाओ
वैभव को मत कैद करो तुम, समता की बाती उकसाओ।

ऊँच-नीच की दीवारें हों वहाँ कहीं पर खड़ी नहीं

अग्रोहा पुनः बसाने का हो गया मुहूरत तो लेकिन
ओ अग्रवंशियो सुनो ! अभी भी एक प्रश्न तो बाकी है
क्या पूर्व पुरातन सी गरिमा सौंपोगे फिर अग्रोहा को
क्या शपथ पूर्वक हम सबने जननी की कीमत आंकी है।

उस पुन्यधरा का रज कण ये भी बार-बार दोहराता है
निर्माणों का वह महायज्ञ कुछ आहुतियां भी चाहता है
आंचल फैलाकर वह धरती सुवनों की ओर ताकती है
आशीषें देने वाली मां, अब खुद आशोष मांगती है।

तुम कोटि-कोटि संख्या में हो, मां का विश्वास न खण्डित हो
श्री अग्रसेन की गौरव-गरिमा सा अग्रोहा मण्डित हो
उस अग्रोहा की कीर्ति ध्वजा बस गगन चूमती हुयी दिखे
वह पुण्य धरा, आदर्श-पगा फिर से अभिनय इतिहास लिखे।

हो पग-पग पर वह सिद्धि कलश, अभ्यागत को वहाँ प्यार मिले
वहाँ एक रुपया एक ईंट की समता को आधार मिले
हो चारों धाम वहाँ चित्रित खजुराहो सी प्रख्याति हो
उपवन ऐसा मधुकुँज बने, बुलबुले तराने गाती हो।

ओने-कोने फिर बेल अगर समता की वहाँ पर चढ़ी नहीं
तो समझो तुमने वह मूरत कुछ ठीक ढंग से गढ़ी नहीं
बन्धु-भावना उस धरती की धूल-धूल में सनी रहे
ऊँच-नीच की दीवारें हों वहाँ कहीं पर खड़ी नहीं।

राग-द्वेष विनसाय महकती गंध वहाँ पर पहरा दे
अपनत्व भावना प्यार पगी उस धरती का रंग गहरा दे
श्रम की बेलें परवान चढ़ें, शिव मन्दिर महिमा मय हो
विश्वास जहाँ पनपे-फूले, जय-विजय पताका फहरा दे।

वह अग्रसेन जिसके शासन में सच का सूरज ढला नहीं !

वह अग्रसेन जिसके शासन में,
सच का सूरज ढला नहीं।
वह अग्रसेन जिसके शासन में,
कभी अँधेरा पला नहीं।

जहाँ समता सदा सुहागिन थी,
अपनत्व मल्हारें गाता था।
जहाँ रिद्धि-सिद्धियों का सौरभ,
जन-जन को प्यार लुटाता था।

जहाँ सावन सदा सरसता था,
गरिमा का मेघ बरसता था।
हर अभ्यागत को अग्रोहा,
सुवनों-सा प्यार परसता था।

फसलें मस्ती में गाती थीं,
सौरभ अविराम लुटाती थीं।
पहरा देता था जहां बसन्त,
किरणें खुद सेज सजाती थीं।

वह अग्रसेन वह योगिराज,
जो कर्मठता का साधक था।
वह था करुणा की भव्य मूर्ति,
सच का सच्चा आराधक था।

वह रीति-नीति का शासक था,
श्रम का जो परम उपासक था।
सम्वेदन का वह महाप्राण,
आदर्शों का अभिभाषक था।

वह था समता का सुदृढ़ सेतु,
जिसको छल पाया नहीं केतु।
वह महाशक्ति का उन्नायक,
जो जीता था जन-जन के हेतु।

वह अग्रसेन था सत्य-पुंज,
जिसकी नजरों में न्याय बसा।
उस अग्रसेन ने दुनिया में,
एक अभिनव-सा इतिहास रचा।

वह था चरित्र का शैदायी,
जो सत्य-अहिंसा के ताई।
क्षत्री से वैश्य बन गया जो,
अन्तस से हिंसा ठुकराई।

वह अग्रसेन आदर्शों की,
प्रति मूरत का आराधक था।
वह था समता का परम मित्र,
वह स्वयं सिद्ध-सा साधक था।

जीवट पौरुष था अग्रसेन,
कटुता से पर, कतराता था।
लेकिन वह अपनों की खातिर,
संचित अभिसार लुटाता था।

उस अग्रसेन के नाम कभी,
सौरभ खुद चँवर ढुलाता था।
वह अग्रसेन तो श्रद्धा की,
कुंकुम से पूजा जाता था।

जो तीर्थ धाम बन सकता है — वह अग्रोहा वीरान पड़ा

ओ अग्रवंश फिर आगे बढ़, क्या सोच रहा है खड़ा खड़ा।
जो तीर्थ धाम बन सकता है, वह अग्रोहा वीरान पड़ा॥
जिसकी माटी में अग्रसेन की, चरण—धूलि मुस्कराती है।
उस अग्रोहे की बरबादी, तुझको आवाज लगाती है॥

★

क्या भूल गया तू निज गौरव, सौरभ से सनी कहानी को।
क्या भूल गया नृप बल्लभ के, अग्रसेन वरदानी को॥
अग्रोहा उनकी जन्म भूमि, देखो उजड़ी उस बस्ती को।
धन, दौलत, कोठी, कार भले, धिक्कार तेरी इस हस्ती को॥

★

तेरे यश-गौरव की गाथा, सर्वत्र सहस्रों गाते हैं।
पर अग्रोहा के टीलों पर, तो चील काग मंडराते हैं॥
तेरा कितना सहयोग जुड़ा, भारत के नव-निर्माणों में।
तुझमें तो है वह अगम शक्ति, खिल जायें पुष्प मसानों में॥

★

आओ फिर अवसर आया है, दीपक की बाती उकसाओ।
दो अपना अपना योगदान, और यश के भागी बनजाओ॥
गौरव, गरिमा के चवँर-छत्र, फिर अग्रोहे में फहर उठे।
फिर अग्रसेन के सपनों की, यश-कीर्ति पताका लहर उठे॥

अग्रोहा पुनः बसाना है

अग्रोहा पुनः बसाना है।
अग्रोहा पुनः बसाना है॥

वह अग्रोहा, जिसकी रजकण में शूरवीरता बिखरी है;
वह अग्रोहा, जिसकी माटी में, गौरव गरिमा निखरी है;
वह अग्रोहा, जहां महासती शीला की पुण्य समाधी है;
वह अग्रोहा, जो पूर्व पुरुष श्री अग्रसेन की थाती है;
उस अग्रोहा की अमर कीर्ति को फिर परवान चढ़ाना है;
अग्रोहा पुनः बसाना है, अग्रोहा पुनः बसाना है।

इतिहास के पृष्ठों में है, जिसकी यश-गाथा अजर-अमर;
जहाँ अग्रसेन महाराजा के, आदर्श बने थे ज्योति-प्रखर;
जहाँ एक तन्त्र ने, प्रजातन्त्र का नया रूप दर्शाया था;
थी जहाँ अमीरी कैद नहीं, सबने समान सुख पाया था;
उस अग्रोहा में नव निर्माणों की ज्योति को पुनः जगाना है;
अग्रोहा पुनः बसाना है, अग्रोहा पुनः बसाना है।

अवतरित हुए थे, अग्रवंश के आदि पुरुष, जहां अग्रसेन;
एक ईंट, एक रुपये की परिपाटी, जिनकी अमर देन;
जहाँ न्याय, सत्य की धर्म-ध्वजा, गर्वित मन से इठलाती थी;
जिसके आंचल में रिद्धि-सिद्ध हंसती थी, मंगल गाती थी;
उस अग्रोहा की पुण्य भूमि पर, फिर सुख-सुमन खिलाना हैं;
अग्रोहा पुनः बसाना है, अग्रोहा पुनः बसाना है।

जिसके आगन में बन्धु-भावना की बहती थी गंगा सदा;
उस अग्रोहा की किस्मत में था हा! क्या यह भी योग बदा;
धन-जन सम्पन्न सुवन जिसके, विचरे सम्मानित मोद भरे;
उसकी जगती इस तरह हा! बरबाद हुई चित्कार करे;
फिर ध्वस्त हुए अग्रोहा के मस्तक पर मुकुट सजाना है;
अग्रोहा पुनः बसाना है, अग्रोहा पुनः बसाना है।

ओ अग्र बंधुओं तुम्हें अगर, निज आन-बान में जीना है;
तो अग्रोहा की छत-विक्षत छाती को पहले सीना है;
तुम कोटि-कोटि संख्या में हो, है ख्याति तुम्हारी वहां-यहां;
खंडित हो जिसकी जन्म भूमि, उठता है उसका भाल कहां?
फिर पूर्व पुरातन गरिमा के सुख-सौरभ को बिखराना है;
अग्रोहा पुनः बसाना है, अग्रोहा पुनः बसाना है।

जहां सत्य का स्वर्ण हंस था
आठों पहर उड़ा करता

उस माटी ने अग्रसेन के, सुवनो तुम्हें पुकारा रे।
जिस माटी से युग-युग तक है, रिश्ता जुड़ा तुम्हारा रे॥

जिस माटी में बलिदानों की पोषित करुण कहानी है।
जिस माटी की रज-कण पैठी अग्रसेन की वाणी है।
जिस माटी में कर्त्तव्यों की केसर गन्ध लुटाती है।
जिस माटी की गौरव-गरिमा अपना शीश झुकाती है॥
उस माटी का तिलक लगाओ, उस माटी को नेह लुटाओ।
जिस माटी में आदर्शों ने अपना रूप संवारा रे॥

वह माटी है अग्रोहा की, हैं चित्रित चारों धाम वहां।
जहां सुबह बनारस जैसी है, है सुखद अवध सी शाम जहां।
उस अग्रोहा की पुन्य भूमि को पावन धाम बनाना है।
उस पुन्य धाम को गौरव-गरिमा के कंगन पहिनाना है॥
विश्व धरा के मानचित्र में, उसको समुचित स्थान मिले।
जिस माटी ने पराक्रमों का, समुचित चित्र उतारा रे॥

जहां शौर्य पूजा जाता था, वरदानों की थाती थी।
वह अग्रोहा की धरती, जो आंचल में सूर्य उगाती थी।
जहां रिद्धि-सिद्धियों का मेला, था चारों ओर जुड़ा करता।
और जहां सत्य का स्वर्ण हंस था, आठों पहर उड़ा करता॥
जहां एक रुपया, एक ईंट की, परिपाटी परवान चढ़ी।
अपने आंचल से राग-द्वेष को, जिसने सदा बुहारा रे॥

जहां न्याय प्रतिष्ठा पाता था, अन्याय ठोकरें खाता था।
कर्त्तव्य-कर्म का पपिहारा, जहां झूम-झूम कर गाता था।
उस माटी की सौंधी सुगन्ध, कुछ ऐसी गन्ध लुटाती थी।
धरती से लेकर अम्बर तक, जो प्रभा-पुंज प्रगटाती थी॥
जिसके कण-कण में कीर्तिपगी, कुछ अद्‌भुत-सा सम्मोहन था।
जिसने अपनी यशो पताका को, हर ओर उबारा रे॥

बहुएं जला के बेटियाँ कैसे बचाओगे ?

कब तक वरों की ऐसे नुमाइश सजाओगे,
बहुएँ जला के बेटियाँ कैसे बचाओगे।

यह किसकी अर्थी आज फिर निकली है गाँव में।
क्या फिर कोई दुलहिन जली है धूप छाँव में ॥
कल था जलाया शारदा को क्रूर सास ने।
सच को उजागर कर दिया था उसकी लाश ने ॥
कब तक सुहागिनों को ऐसे भून खाओगे,
कब तक सुहागे खून से मेंहदीं रचाओगे ॥बहुएँ०

तुमने तो क्रूर मौत को भी मात कर दिया।
कोमल कली को शूलों के जो साथ कर दिया ॥
जो लालची हैं दहेज के खूँखार-भेड़िये।
आँखों को मूँद करते हैं यह वार भेड़िये ॥
कब तक रहेगा कत्ल का यह सिल सिला जारी।
कब तक बहू को मौत की डोली बिठाओगे ॥ बहुएँ०

बेटी तुम्हारी जल गयी कल जब यह सुनोगे।
तब कहकहे लगाओगे या शीश धुनोगे ?
सरला भी किसी माँ के कलेजे की कली थी।
हाथों से क्रूर जेठ के उस दिन जो जली थी ॥
बहुओं को मार-मार जो हुण्डी भुनाओगे,
बेटी के आगे शीश फिर कैसे उठाओगे ॥बहुएँ०

सुरसा दहेजी जिस्म को कितना बढ़ायेगी।
जबड़ों में अपने लाशों को कब तक चबायेगी ॥
कितनों को बनायेगी निशाना ये हवस का।
छोड़ेगी जान कब यह लगा खून का चस्का ॥
सारे निशा तो कत्ल के कर लोगे साफ तुम।
दामन से कैसे खून के धब्बे मिटाओगे ॥ बहुएँ०

उन सीढ़ियों से श्यामला कैसे फिसल गयी।
चूनर सुहाग की कफ़न में क्यों बदल गयी ॥
कल ही तो गीता गाँव में ब्याह करके आयी थी।
मरने को कफ़न दहेज में क्या साथ लायी थी ?
दिल्ली सा न्याय हर जगह जब होने लगेगा,
डायन को कैसे दहेज की बोटी खिलाओगे ? बहुएँ०

यह है भरत का देश मगर यह क्या हो गया ?
कम्बख्त कौन दहेज के यह बीज बो गया ?
आओ तो इनके जबड़ों में एक कील ठोक दें।
वहशीपने को इनके यहीं आओ रोक दें।
रीना की है जो सास वह मीना की माँ भी है।
बहू को जला के बहिन को कैसे बचाओगे ॥ बहुएँ०

सुषमा की आँख में सजे सपने हजार थे।
पति ने पिन्हाये कल जिसे फूलों के हार थे ॥
वो कैसे आज फांसी का फन्दा बना गयी ?
क़ातिल को माफ कर दिया बन्दा बना गयी ॥
जिन ऊँगलियों को पीठ पर रक्खा है बहू के,
उन ऊंगलियों को खून में कब तक डुबाओगे ॥बहुएँ०

कब तक यह भूखे भेड़िये हुँकार भरेंगे ?
मौके से घर की लक्ष्मियों पे बार करेंगे ॥
कंगनों को तोड़-मोड़कर पायल को खोलकर।
दौलत के बल पर न्याय को गुमराह करेंगे ॥
दुष्कर्म तुमने कितने ही अब तक निभा लिए।
ऐसे जघन्य पाप को कैसे पचाओगे।
बहुएँ जला कर बेटियाँ कैसे बचाओगे ?

बहुएं जला के बेटियाँ कैसे बचाओगे ?

कब तक वरों की ऐसे नुमाइश सजाओगे,
बहुएँ जला के बेटियाँ कैसे बचाओगे।

यह किसकी अर्थी आज फिर निकली है गाँव में।
क्या फिर कोई दुलहिन जली है धूप छाँव में ॥
कल था जलाया शारदा को क्रूर सास ने।
सच को उजागर कर दिया था उसकी लाश ने ॥
कब तक सुहागिनों को ऐसे भून खाओगे,
कब तक सुहागे खून से मेंहदीं रचाओगे ॥बहुएँ०

तुमने तो क्रूर मौत को भी मात कर दिया।
कोमल कली को शूलों के जो साथ कर दिया ॥
जो लालची हैं दहेज के खूँखार-भेड़िये।
आँखों को मूँद करते हैं यह वार भेड़िये ॥
कब तक रहेगा कत्ल का यह सिल सिला जारी।
कब तक बहू को मौत की डोली बिठाओगे ॥ बहुएँ०

बेटी तुम्हारी जल गयी कल जब यह सुनोगे।
तब कहकहे लगाओगे या शीश धुनोगे ?
सरला भी किसी माँ के कलेजे की कली थी।
हाथों से क्रूर जेठ के उस दिन जो जली थी ॥
बहुओं को मार-मार जो हुण्डी भुनाओगे,
बेटी के आगे शीश फिर कैसे उठाओगे ॥बहुएँ०

सुरसा दहेजी जिस्म को कितना बढ़ायेगी।
जबड़ों में अपने लाशों को कब तक चबायेगी ॥
कितनों को बनायेगी निशाना ये हवस का।
छोड़ेगी जान कब यह लगा खून का चस्का ॥
सारे निशा तो कत्ल के कर लोगे साफ तुम।
दामन से कैसे खून के धब्बे मिटाओगे ॥ बहुएँ०

उन सीढ़ियों से श्यामला कैसे फिसल गयी।
चूनर सुहाग की कफ़न में क्यों बदल गयी ॥
कल ही तो गीता गाँव में ब्याह करके आयी थी।
मरने को कफ़न दहेज में क्या साथ लायी थी ?
दिल्ली सा न्याय हर जगह जब होने लगेगा,
डायन को कैसे दहेज की बोटी खिलाओगे ? बहुएँ०

यह है भरत का देश मगर यह क्या हो गया ?
कम्बख्त कौन दहेज के यह बीज बो गया ?
आओ तो इनके जबड़ों में एक कील ठोक दें।
वहशीपने को इनके यहीं आओ रोक दें।
रीना की है जो सास वह मीना की माँ भी है।
बहू को जला के बहिन को कैसे बचाओगे ॥ बहुएँ०

सुषमा की आँख में सजे सपने हजार थे।
पति ने पिन्हाये कल जिसे फूलों के हार थे ॥
वो कैसे आज फांसी का फन्दा बना गयी ?
क़ातिल को माफ कर दिया बन्दा बना गयी ॥
जिन ऊँगलियों को पीठ पर रक्खा है बहू के,
उन ऊंगलियों को खून में कब तक डुबाओगे ॥बहुएँ०

कब तक यह भूखे भेड़िये हुँकार भरेंगे ?
मौके से घर की लक्ष्मियों पे बार करेंगे ॥
कंगनों को तोड़-मोड़कर पायल को खोलकर।
दौलत के बल पर न्याय को गुमराह करेंगे ॥
दुष्कर्म तुमने कितने ही अब तक निभा लिए।
ऐसे जघन्य पाप को कैसे पचाओगे।
बहुएँ जला कर बेटियाँ कैसे बचाओगे ?

अभी दहेज की बलिवेदी पर तोड़ रही हैं ललनाएँ दम

पिछले एक दशक में काफी, अग्रवाल-जन आगे आए
अग्रसेन की जय-जय गूंजी, जन्म दिवस भी खूब मनाए
उनके आदर्शों को लेकर संस्मारिका खूब छपी हैं
स्वागत द्वार बने बहुतेरे पग-पग वन्दन वार बंधी हैं

बनी बहुत सी सभा-संस्था, सम्मेलन भी हुए बड़े हैं
हुयी बहुत चर्चा सुधार की, प्रस्तावों के ढ़ेर जुड़े हैं
लेकिन बोलो भाई मेरे, हम सब कितने कदम चले हैं
अग्रवाल-जन चकाचोंध के आगे अब तक गए छले हैं

कितना बदला है समाज और कितने हुए विकासोन्मुख हम
अभी दहेज की बलिवेदी पर तोड़ रहीं हैं ललनाएं दम
रूढ़िवादिता अभी शिकजों में समाज को जकड़े बैठी
विधवा बहिनें अभी विसुरतीं, रोती, शीश पकड़ कर बैठी

अग्रसेन की कुल देवी की जिनके उपर कृपा बनी है
कितने दीन-हीन बान्धव को उठा सके जो लोग धनी हैं
कोटि-कोटि सम्पन्न सपूतों का अगरोहा वहीं पड़ा है
अग्रजनों की मातृ भूमि पर विध्वंसों का दैत्य खड़ा है

पुनः बसेगा अग्रोहा अब, मंचों से आवाजें गूंजी
वह मां क्यों बदहाल रही है जिनके बेटों के घर पूँजी
बन्द करो यह गाजे-बाजे और मसनवी शोर-शरावे
बन्द करो उत्सव, सम्मेलन और मसनवी सभी तमाशे

छोटे और बड़ों का अन्तर, यदि समाज में रहना ही है
तो फिर ऐसी क्या मजबूरी, मंचों से कुछ कहना ही है
कथनी और करनी का अन्तर यों ही चलता अगर रहा तो
नारे बाजी का आकर्षण यदि समाज में बना रहा तो

अच्छा है फिर छोड-छाड़ दें हम यह सारी अभिनय बाजी
यह नाटक, यह रंग मंच, यह अधिवेशन सम्मेलन साजी
अग्रसेन बदनाम न होगा, अगर प्रदर्शन आम न होगा
उसकी सन्तानों के कारण अग्रसेन का नाम न होगा

अग्रसेन तो अग्रसेन हैं, वह तो युग-युग अमर रहेंगे
लोकतंत्र के अधिनायक की जय हम ही क्या सभी कहेंगे
हुए विवाह सामूहिक जितने, वे सम्मानित नहीं हुए हैं
यह समाज तो वह समाज है, खेले जिसने बहुत जुए हैं

अग्रसेन की जय कहने पर आती कितनी जिम्मेदारी
खेल तमाशे दिखा-दिखा कर थक जाता एक रोज मदारी
आज जमाना बदल गया है अभिनय कितने रोज चलेगा
यह समाज पहिने नक़ाब यों बोलो कितना और छलेगा

दूध-दूध पानी का पानी बन्धु कभी तो होना ही है
हमें मसनवी अर्जित गरिमा, बन्धु कभी तो खोनी ही है
अच्छा है हम सोचें समझें या फिर बन्द करें यह ड्रामे
अग्रसेन की जय-जय कारें जन्म जयन्ती के हंगामे

सच सुनना कड़वा होता है यह तो रीति-नीति है भाई
झूट बांधती है सर सेहरा मरती नित्य सत्य की माई
अग्रोहा के उन टीलों में सोया जो इतिहास पड़ा है
तनिक उलीचो माटी को तो देखोगे उत्कर्ष खड़ा है

नारे बाजी और प्रदर्शन, सम्मेलन तो कई हुए हैं
पत्र-पत्रिका के पृष्ठों पर अग्रसेन क्या अमर हुए हैं
महामना की जन्म-जयन्ती ठौर-ठौर आयोजित होती
लेकिन इससे अग्रसेन की गरिमा क्या प्रतिभासित होती

उसका लेते नाम बहुत ही, आदर्शों का डंका बजता
लेकिन जनमानस में कितना, अग्रसेन का चित्र सँवरता
यह तो नवयुग मेरे भाई, यहाँ प्रदर्शन नहीं चलेगा
चका-चौंध का सहारा लेकर कौन किसे कब तलक छलेगा

दीप जले प्रतिमा के आगे, लेकिन यह भी झूंट नहीं है
उनके आदर्शों के प्रति मानस में क्या भाव कहीं हैं
अभी गरीबी और अमीरी का अन्तर क्या घट पाया है
अभी परस्पर प्यार दिलों में क्या समाज के बँट पाया है

अब भी छोटे और बड़ों का भेद-भाव बरता जाता है
यही अरे क्या, अग्रसेन की गौरव-गरिमा की गाथा है
जिसका अर्चन पूजन वन्दन ठौर-ठौर पर किया जा रहा
जिसके आदर्शों का अमृत जन्म दिवस पर पिया जा रहा

किन्तु गरीबी का उत्पीड़न क्या समाज से अभी घटा है
यह समाज तो ऊँच-नीच की दीवारों के मध्य बँटा है
डाक टिकट पर अग्रसेन की छवि का आना बड़ी बात है
लेकिन कार्य-कलापों में वे नहीं जुड़ पाए-सभी ज्ञात है

चलो मनाओ जन्म-दिवस तो

जन्म-दिवस फिर अग्रसेन की
याद दिलाने आया है
पर ज्वलन्त कुछ प्रश्न साथ
ये झोली में भर लाया है

अग्रसेन की जय कहने का
अग्रवंश अधिकारी कितना
उसने जो थाती सौंपी है
उसके प्रति आभारी कितना

एक रुपया-एक ईंट की
बातों के लद गये जमाने
लेकिन उस के मूलमंत्र के
भाव कहाँ हमने पहिचाने

कथनी और करनी में होगी
धरा-गगन की सी यदि दूरी
अग्रसेन को अपना गौरव
कहने की क्या है मजबूरी

पिछले दो दशकों में हमने
नारे खूब उछाले भाई
पूरब से पश्चिम उत्तर से
दक्षिण जय-जयकार गुँजाई

मोटी-मोटी संस्मारिकाएँ
सज-धज कर निकल रही हैं
उनके आदर्शों की गरिमा
जो थी वो भी फिसल रही हैं

अग्रसेन की सभा-संस्थाएँ
केवल प्रतिमान हो गयीं
घर-घर फलती फूट
अग्रजाति की पहिचान हो गयी

दो नम्बर के बाजीगर तो
अच्छी चाँदी कूट रहे हैं
अग्रसेन के आदर्शों को
दोनों हाथों लूट रहे हैं

टूट रहे हैं रिश्ते-नाते
दहेज-दिखावे की बलिहारी
पहले सती हुआ करती थीं
अब जल कर मरती हैं नारी

पन्द्रह-बीस लाख तक पहुँची
वर की नीलामी में बोली
क्या सुधार का सुधड रूपये
जिसने नयी खिड़कियां खोलीं

नेता ही नेता समाज में
कहाँ कार्यकर्ता हैं बोलो
भाषण तो भाषण होता है
थोड़ा अपना हृदय टटोलो

अग्रसेन के माप-दण्ड पर
कितने लोग खरे उतरेंगे
कोई बिरला प्रगटेगा तो
सदियों में जाकर सुधरेंगे

अग्रोहा तो बस जायेगा
पर समता कहाँ से प्रगटेगी
अग्र जाति जो सिमट रही है
अभी और कब तक सिमटेगी

कुछ दहेज की फाँस दिलों में
इतनी गहरी पैठ गयी हैं
कई सुहागिन परित्क्ताएँ
बाबुल के घर बैठ गयी हैं

कहाँ आज वह गौरव-गाथा
जिसे सहेजा था नृपवर ने
लील लिया है नीति-रीति को
दहेज दिखावे के अजगर ने

चलो मनाओ जन्म-दिवस तो
इससे क्या होना जाना है
सावधान, लेकिन धीरज का
छलक रहा अब पैमाना है

युग परिवर्तन के सन्दर्भों में

——एक चेतावनी

हमको आज जाति को अपनी, नई दिशायें देनी होंगी।
नव-सर्जन की इस बेला में नयी मान्यता लेनी होंगी॥

आगे रहते रहे सर्वदा अग्रवाल इससे कहलाते।
कोई ऐसा क्षेत्र नहीं है अग्र-वंश जिसमें नहीं पाते॥

युग-परिवर्तन के लिहाज से यदि परिवर्तन नहीं लायेंगे।
तो निश्चित ही अग्रसेन के वंशज पीछे रह जायेंगे॥

गौरव-गर्वी था अतीत, हो वर्तमान भी गौरवशाली।
स्वयं रहे खुशहाल और हम औरों को भी दें खुशहाली॥

अग्रवाल सब बन्धु हमारे, अग्रवंशी जो कहलाते हैं।
अग्रसेन की संतानें सब, इतिहासों को दोहराते हैं॥

ऐसे पूर्व-पुरुष के वंशज, जन्म-स्थान उजाड़ पड़ा है।
अग्रोहे सी पुन्य भूमि पर बर्बादी का दैत्य खड़ा है॥

भाई चारगी, नेह-नीति के दीप जहाँ निशि-दिन जलते थे।
अग्रवाल ही नहीं वहाँ तो सभी लोग सुख से पलते थे॥

एक रुपया-एक ईंट की देन जहाँ की परिपाटी थी।
उस धरती ने अभ्यागत को वैभव की कुंकुम बांटी थी॥

कुल वधुओं ने रणचण्डी बनकर दुश्मन को ललकारा था।
पुरुष जहां के वीर-व्रती थे, नीति-नियम जिनको प्यारा था॥

आज वहाँ की दशा देखकर शीश हमारे झुक जाते हैं।
साम्ययोग के कर्णधार के वंशज क्यों कर इठलाते हैं॥

देना होगा ध्यान उधर भी सबको निज कर्त्तव्य मानकर।
हमने वो इतिहास रचे हैं, चकित हुआ संसार जानकर॥

अग्रवंशियों को मिलजुलकर उजड़ा तीर्थ बसाना होगा।
पूज्य-पुरुष की उस धरती को श्रद्धा-सुमन चढाना होगा॥

नई पीढ़ी नए युग में नए नारे लगाती है

अभी कुछ दिन हुए, नव चेतना हममें समाई है।
जयन्ती महामना की धूम से हमने मनाई है॥
भले, तुम भव्य-भवनों के नए निर्माण तो करना।
मगर सद्भावना की भी वहाँ प्रस्थापना करना॥

*

कहीं पर शारदा, सरिता जला दी जा रहीं देखो।
कहीं सरला को विष देकर के उसकी जान ले ली है॥
कहीं पर दहेज कम लायी सुनीता का गला कटता।
कहीं नीना नदी में डूबकर प्राणों से खेली है॥

*

कहीं संत्रास से पीड़ित, यशोदा भाग जाती है।
इन्हीं सन्दर्भों में अब तो हमारी खूब ख्याती है॥
करो चेहरे उजागर भड़ियों के अब निडर होकर।
नई पीढ़ी नए युग में नए नारे लगाती है॥

*

अभी वैषम्य की सुरसा, ठहाके मार हंसती है।
कहीं पर अहम पलता है, शराफत बहुत सस्ती है॥
कोई करुणा, दया, ममता का दामन थाम जीता है।
किसी के हाथ में खंजर, किसी के हाथ गीता है॥

*

विषमता की सरोजा से तो हम अभिसार करते हैं।
स्वयं की बहिन-बेटी से बहुत ही प्यार करते हैं॥
किसी की लाड़ली पर, पर घिनौने जुल्म ढाते हैं।
मगर मंचों से कुछ भी बात कहते कब अघाते हैं॥

*

अगर पैसे के बल बूते पर ही कुछ काम करना है।
प्रसिद्धि, पहुँच के बल पर ही कुछ नाम करना है॥
कुटेवों से लड़ों चलकर गरीबी का गला काटो।
कहीं कुछ द्रव्य का सौरभ सुकृत्यों के लिए बांटो॥

*

यदि यों ही चलेगा तो बड़े 'फल' भोगने होंगे।
नई पीढ़ी को ऐसे कृत्य जबरन रोकने होंगे॥
अभी तो भावना उत्सर्ग की सबमें जगाना है।
अभी उपलब्धियाँ पाने नए सूरज उगाना है॥

अग्रसेन का नाम रहेगा

जब तक धरती-गगन रहेंगे
और पुण्य निष्काम रहेगा
तब तक विश्व धरा पर चर्चित
अग्रसेन का नाम रहेगा

जिस महामना ने ऊँच-नीच की
बेढब खाई पाटी थी
और बन्धु-भावना की खुशबू
जिसने जन-जन में बांटी थी

संस्कृति की शतत साधना को
जो रहा समर्पित जीवन भर
था एक तंत्र शासन जिसका
इस लोक तंत्र से भी बढ़ कर

जिससे समता की दीक्षा ने
जन-जन ने पाया अभय दान
वह साम्ययोग का शिल्पकार
कितना अद्भुत कितना महान्

शोषण का जहर पिया जिसने
मानवता को अमृत परसा
जिसके शासन में होती थी
सुख-समता की अविरल वर्षा

जिसके आदर्शों की वेलें
फूलीं-पनपीं, परवान चढीं
करुणा और ममता की मूरत
जिसने कौशल के साथ गढी

कर्तव्य-कर्म की वेदी को
जिसने निष्ठा से नमन किया
वह कर्मठता का मूर्त्त रूप
था बड़ी शान के साथ जिया

उस अग्रसेन की कीर्तिध्वजा
जग सदियों तक फहरायेगा
उसके कृत्तों को जन-मानस
श्रद्धा के सुमन चढ़ायेगा

जिसके शासन में एकतन्त्र भी प्रजातन्त्र से भारी था

जिसके शासन में एकतंत्र भी
प्रजातन्त्र से भारी था
वह योगिराज वह अग्रसेन
एक महापुरुष अवतारी था
जिसके शासन में गली-गली
समता के दीपक जलते थे
वह साधक सत्य - अहिंसा का
समता का परम पुजारी था।

□

जहाँ कभी गरीबी के फन्दे में
विवश दीनता फंसी नहीं
सबको समान हक मिलता था
वहाँ कभी दीनता बसी नहीं
अपनत्व लुटाया जाता था
जन-जन द्वारा जहाँ जन-मन पर
जहाँ राग-द्वेष की हीन भावना
कभी किसी दिन हँसी नहीं।

□

जो रचा - रचा कर यज्ञ
शान्ति के विरवे रोपा करता था
हर आगत-अभ्यागत को जो
धन-वैभव सौंपा करता था
खुशहाली की नर्तकी जहाँ
घर-घर में नर्तन करती थी
जहाँ पेड़-पेड़ की डाल-डाल से
सौम्य-भावना झरती थी।

उस धरती को छल-कपट
कहाँ छूने का साहस करते थे
जहाँ शांति-कपोतों के टोले
दिन रात उड़ानें भरते थे
जहाँ आदर्शों का हरकारा
प्रहरी-सा गश्त लगाता था
जहाँ अग्रसेन का महामन्त्र
जन-मन उत्साह जगाता था।

□

जहां पर सतियों के जौहर ने
थे नये - नये प्रतिमान गढ़े
जहाँ पर गुरुकुल में छात्रों ने
उत्सर्गों के इतिहास पढ़े
जहां पर श्रम पूजा जाता था
सम्मान कला जहां पाती थी
जहाँ श्रद्धा ने मृगछौनों ने
थे ऊँचे-ऊँचे दुर्ग चढ़े।

□

जहाँ रिद्धि-सिद्धियों की राधा
मधु कुँज सजाया करती थी
षड्यंत्रों की पनिहारिन जहाँ
पानी छूने को डरती थी
जहाँ उल्लासों के महापर्व पर
प्यार हमेशा बँटता था
उस अग्रोहा की माटी तो
जन-जन की पीड़ा हरती थी।

अग्रोहा

बीरान पड़ा

ओ अग्रवश फिर आगे बढ़।
क्या सोच रहा है खड़ा-खड़ा॥
जो तीर्थ धाम बन सकता है।
वह अग्रोहा वीरान पड़ा॥

□

जिसकी माटी में अग्रसेन की।
पग-धूलि मुस्काती है॥
उस अग्रोहे की बरबादी।
तुमको आवाज लगाती है॥

□

क्या भूल गया तू निज गौरव।
सौरभ से सनी कहानी को॥
क्या भूल गया तू नृप बल्लभ के।
अग्रसेन बरदानी को॥

□

जिसके वंशज बनकर तुमको।
धन दौलत के भंडार मिले॥
जिसकी आशीसों से ही सुख।
सुविधा के अम्बार मिले॥

□

अग्रोहा उनकी कर्मभूमि।
देखो उजड़ी उस बस्ती को॥
धन-दौलत कोठी कार भले।
धिक्कार तेरी इस हस्ती को॥

तेरे यश-गौरव की गाथा।
सन्यंत्र सहस्त्रों गाते हैं॥
पर अग्रोहे के टीलों पर।
तो चील काग मंडराते हैं॥

□

जहाँ सोई सुभग सती शीला।
वहाँ देखो ध्वस विहंसते हैं॥
तुम चाहो तो अग्रोहे में।
सौ ताज महल बन सकते हैं॥

□

तेरा कितना सहयोग जुड़ा।
भारत के नव निर्माणों में॥
तुझ में तो है यह अगम शक्ति।
खिल जायें पुष्प मालाओं में॥

□

आओ फिर अवसर आया है।
दीपक की बाती उकसाओ॥
दो अपना-अपना योगदान।
और यश के भागी बन जाओ॥

□

गौरव गरिमा के चंवर छत्र।
फिर अग्रोहे में फहर उठे॥
फिर अग्रसेन के सपनों की।
यश-कीर्ति पताका लहर उठे॥

उस अग्रसेन की न्याय तुला वैभव के आगे झुकी नहीं

ओ अग्रबन्धुओ सुनो-सुनो, तुम अपनी गरिमा भूल रहे।
तुम महापुरुष के वंशज हो, कवि तुमको याद दिलाता है॥
जो लोग स्वयं के लिए जिएं, जो लोग स्वयं के लिए मरें।
उनका अस्तित्व अकारथ है, ऐसा इतिहास बताता है॥

○

तुम उस जाति के धर्मपुत्र, जिनका युग-युग सम्मान रहा।
पर वर्तमान उस जाति के, कर्मों को नहीं बखान रहा॥
इसका भी कारण प्रस्तुत है, यदि सिन्धु घड़े में आ जाये।
बौने लोगों के घर भी यदि, कुछ उच्च सिद्धियां पा जाएं॥

○

पर यह जीवन का मर्म नहीं, धन तो आता है जाता है।
पर आदर्शों का कलाकार, युग-युग तक पूजा जाता है॥
वह अग्रसेन आदर्शों का, गौरव-गर्वी प्रतिमान रहा।
तब ही रथ सुखसमता का, अग्रोहा का गतिमान रहा॥

○

उस अग्रसेन की न्याय तुला, वैभव के आगे झुकी नहीं।
और इसीलिये अग्रोहा में भी, कभी मनुजता चुकी नहीं॥
वहाँ शिवमंदिर पर साम्ययोग की, कीर्तिध्वजा फहराती थी।
वैभव की गंगा इसीलिए, उस धरती को नहलाती थी॥

○

वहां तनिक उलीचो माटी को, श्रद्धा का कुँकम पावोगे।
वहां सत्य-अहिंसा झाकेंगी, ज्यों-ज्यों बाती उकसावोगे॥
मग्न-हृदय जय-विजय वहां की, रजकण में बिखरे बैठे।
यश-कीर्ति और आदर्शों के, साये वहां पर गहरे बैठे॥

यह अग्रोहा की धरती है

जिसने देखे हैं महा विनाश और उत्सर्गों की ऊँचाई
उत्सर्ग भावना ललक लिए हँसती जहाँ की तरुणाई
जहाँ पर ललनाएँ हँस-हँस कर जौहर को गले लगाती थीं
जहाँ की माटी बलिदानों के नूतन इतिहास बनाती थीं
अपनत्व भरा है आँचल में
माटी में गहरी ममता है
जहाँ पर सतियों की गाथाएँ, जन-मन में श्रद्धा भरती है
यह अग्रोहा की धरती है, यह अग्रोहा की धरती है

जिसमें गंगा-सी पावनता और गीता-सी निश्छलता है
जहाँ तनिक उलीचो माटी तो समता का दीपक जलता है
जिसके रज-कण में शौर्य-पगा गौरव का मुखड़ा निखरा है
जिसकी माटी में मुस्काता गरिमा का कुंकुम बिखरा है
माटी में सौंधी गंध लिए
समता की सुखद सुगंध लिए
जो बन्धु भावना की गुलाल, जन-जन को अर्पित करती है
यह अग्रोहा की धरती है यह अग्रोहा की धरती है

बजता था हर सुबह जहाँ हर रोज सत्य का पान्जजन्य
हर गली-गली, हर घर-आँगन, बस्ती-बस्ती और बीच चौक
और जहाँ प्रेम के मृग छौने, हर और कुलांचें भरते थे
हर मोड़ अहिंसा की राधा, पढ़ती थी गीता के श्लोक
जहां अग्रसेन की शुभ वाणी
हर पात-पात से झरती है
जन-जन को अपनापन देती, सन्ताप हृदय का हरती है
यह अग्रोहा की धरती है, यह अग्रोहा की धरती है

श्री अग्रवाल नवयुवक सभा सिद्धीम्बर बाजार हैदराबाद
द्वारा
पुरस्कृत रचना
श्री अग्रसेन जयन्ती (1962)

अग्रवाल समाज के नाम

एक खुला पत्र

1

ओ, अग्र-बन्धुओ उठो ! उठो !
इतिहास बुलाता है देखो !
गौरव-गरिमा, गर्वी अतीत,
तुम पर शरमाता है देखो !!

2

है आज तुम्हारी जाति कहाँ,
है किधर तुम्हारा बाँकापन !
ओ, अग्रसेन की संतानो,
हो रहा तुम्हारा घोर पतन !!

3

कहाँ गया तुम्हारा जाति-प्रेम,
उन्नति का मार्ग विशाल कहाँ ?
सम्मानित जिनकी जाति नहीं,
है ऊँचा उनका भाल कहाँ ?

4

किस लिए पतन हो रहा अरे,
इस ओर नहीं क्यों ध्यान गया !
थी अग्र-जाति कितनी आगे,
वह कहाँ आज सम्मान गया !!

5

कितनी प्रति भासित प्रतिभाएँ,
बेहाली में दिन काट रही !
कितने सुमनों की मुस्कानें,
आँखों से आँसू बाँट रही !!

6

यह बात नहीं कि जाति मेरी,
हो गई सम्पदा से विहीन !
हाँ, किन्तु पुरातन गरिमा से,
हो रही जाति यह-हीन !!

7

है अग्रवाल धनपति-समाज,
ऐसा सब लोग समझते हैं !
इसके धन-जन सम्बल से तो,
दुनियाँ के काम संवरते हैं !!

8

जिसके बल-पौरुष से देखो,
इस अग्र-जाति की गिनती है !
उस पूज्य पुरुष आदि पुरुष,
की ही तो आज जयन्ती है !!

9

एक ईंट एक रुपया वाली,
परिपाटी जिसने चल वायी !
जिसके शासन में साम्ययोग की,
झाँकी चित्रित हो पायी !!

10

जिसके उज्ज्वल आदर्श सदा
के लिए हो गये अजर-अमर !
जिनका गौरव-गर्वी अतीत,
आलोकित करता नई डगर !!

11

था तब आपस में प्यार बहुत,
था ऊँच-नीच का भेद नहीं !
थे अपने-अपने सब के घर,
थी जहाँ अमीरी कैद नहीं !!

12

उसकी जाति में भरे पड़े हैं,
कोटि-कोटि श्रीमान आज !
सत्कार्यों के हित देते हैं,
जो हृदय खोल कर दान आज !!

13

उत्पादन की क्षमता वाले !
हैं आज बहुत से काम करो,
उद्योगों में धन का सुयोग दे,
द्रव्य कमाओ नाम करो !!

14

इतिहास प्रमाणित नहीं अभी,
कुछ ध्यान इधर भी देना है !
विद्वान-कलाविद बहुत भरे,
संकल्प-मात्र बस लेना है !!

15

क्या हाल आज अगरोहे का,
जो धाम रहा श्रीमानों का !
खंडित अवशेष दिखाते हैं,
जहाँ पतन अग्र-सन्तानों का !!

16

युग थोप रहा जिम्मेदारी,
श्री अग्रसेन संतानों पर !
दो ध्यान समय की माँगों पर,
युग के संकेत-निशानों पर !!

17

युग चरण बढ़ रहे तेजी से,
हम लोग जहाँ के वहाँ पड़े !
चल रहा समय का चक्र-तीव्र,
हम देख रहे हैं खड़े-खड़े !!

18

इन नयी-नयी तस्वीरों में,
हम रंग नहीं भर पायेंगे !
तो निश्चित जानो अग्र-वीर !
हम पड़े यहीं रह जायेंगे !!

19

दौलत से ब्याज कमाने का,
व्यवसाय न अब तो अपनाओ !
मेहनत का सिक्का चलता है,
मेहनत से दौलत उपजाओ !!

20

इस मंगल-मय शुभ-बेला पर,
जिनका अभिनन्दन करते हैं !
उस महा-मना के प्रति अपने,
अन्तर से वन्दन करते हैं !!

21

फिर एक बार इस जाति के,
पहरेदारो ! हो जाओ सजग !
कर्तव्य-कर्म की वेदी पर,
आगे बढ़ कर धरदो दो डग !!

22

फिर अग्र-जाति का नन्दन-वन,
सुन्दर सुधियों से महक उठे !
फिर अग्रसेन के सुखद-सुवन,
कोकिल के स्वर में चहक उठे !!

अग्र

गीत

आओ मिलजुल नए गीत गाने चलो।
अग्रवीरो ! जयन्ती मनाने चलो॥

भूले क्या आज तुम किसकी संतान हो ?
जिसकी जाति का सर्वत्र सन्मान हो॥

उसके आदर्श को दृढ़ बनाने चलो।
अग्रवीरो ! जयन्ती मनाने चलो॥

फिर परस्पर सुखद भाईचारा बढ़े।
नित्य उत्साह नूतन हमारा बढ़े॥

द्वेष और डाह के दुर्ग ढाने चलो।
अग्रवीरो ! जयन्ती मनाने चलो॥

फिर से चूमे सफलता हमारे कदम।
आओ आगे बढ़ें आज खा के कसम॥

प्यार की ज्योति घर घर जगाने चलो।
अग्रवीरो ! जयन्ती मनाने चलो॥

तुम ही जाति के गौरव हो सरताज हो।
अपने गौरव को भूले हुए आज हो॥

पूर्व गरिमा को फिर से लिवाने चलो।
अग्रवीरो ! जयन्ती मनाने चलो॥

अपने राजा अग्रसेन महाराज थे।
जिनके क्या खूब ही ठाठ के राजा थे॥

आज वन्दन है शत-शत हमारा उन्हें।
न्याय और सत्य को फिर जगाने चलो॥

एक रुपया दो ईंटों की परिपाटी पर।
देखो कैसा अनोखा बसाया नगर॥

उनके आदर्शों को जगमगाने चलो।
अग्रवीरो ! जयन्ती मनाने चलो॥

क्यों सुधार का राम मौन है, बेड़ी क्यों उसके पाँवों में ?

अग्रसेन के आदर्शों का जब-तब चंवर ढुलाने वालो।
उत्कर्षों को तो फिर छूना, पहले अपनी साख सम्भालो।

○

अभी जाति-गंगा में भाई कितना सारा जहर घुला है।
अग्रसेन के अग्रवंश का चेहरा कितना दूध-धुला है ?

○

दहेज दिखावे की सुरसा का रूप दिनों दिन बढ़ता जाता।
लक्ष्मी नाच रही बे-पर्दा, रंग कुंकुमी चढ़ता जाता।

○

कहो कहीं अनुभूति दिखाई देती क्या सेवा भावों में।
क्यों सुधार का राम मौन है, बेड़ी क्यों उसके पावों में ?

○

ओ समाज के भरत-लक्ष्मण तुम पर आशा टिकी हुई है।
वरना आडम्बर के हाथों सच की सीता बिकी हुई है।

○

बन्धु भावना की द्रौपद का चीर हरण हो रहा अभी तक।
जन-जन के मन रोष व्याप्त है उद्धारक सो रहा अभी तक।

○

नव युग के विप्लवी मंच पर बहुओं का जलना जारी है।
महलों के प्रति कुटियाओं का अन्तर्द्वन्द्व बहुत भारी है।

○

जो सेवा-भावी सुमन सरीखा अग्रोहा-पथ में खिलता है।
अग्रसेन की पूजा करने का अधिकार उसे मिलता है।

○

करनी और कथनी के अन्तर की खाई को यदि पाटोगे।
सद्भावों के चरणामृत को तब ही तो सबको बाँटोगे।

हम अग्रसेन के वंशज हैं ;
कुछ आदर्शों से जुड़े हुये।

कुछ पृष्ठ खुले हैं, पोथी के ;
कुछ पृष्ठ मगर हैं, मुड़े हुए !
हम अग्रसेन के वंशज हैं ;
कुछ आदर्शों से जुड़े हुए !!

○

जो कल तक सुखद धरोहर थे ;
वे जाने कहाँ उसूल गए !
हम ब्याज कमाते थकें नहीं ;
पर मूल-राशि को भूल गए !!

○

जो था करुणा का महाकाव्य ;
हम सर्ग न उसके बन पाए !
उन आदर्शों को छलनी से ;
दो माशे भी नहिं छन पाए !!

○

वह सत्य अहिंसा का तपसी ;
जो संयम का व्रतधारी था !
था सम्वेदन की पृष्ठ भूमि ;
समता का सौम्य-पुजारी था !!

उस आदि-पुरुष के वंशज हम ;
जो सदियों में, आ पाता है !
हमको तो अपना अहम स्वयं ;
बस धीरे-धीरे खाता है !!

○

अब भी चेतो, अब भी जागो ;
उस महामना की सन्तानो !
हम किस संस्कृति की अमर देन;
अपने को कुछ तो पहिचानो !!

○

समता-ममता का मिलाजुला ;
जो एक समूचा मन्दिर था !
जो मानवता के मर्मों का ;
लहराता एक समन्दर था !!

○

हम स्वर्णिम-युग की एक कड़ी;
कहाँ संयम साधन, शील गए !
उस प्रभा-पुंज की किरणों को,
अंधियारे कैसे लील गए !!

आज देश में नया दौर है,
नयी रोशनी, नया सवेरा

अग्रबन्धुओं, तुम्हें आज कुछ
कहने को मन करता मेरा
आज देश में नया दौर है
नई रोशनी, नया सवेरा

○

वैसे अग्रसेन के वंशज
पारंगत हैं सभी दिशा में
लेकिन युग ने चोला बदला
नया उजाला हुआ निशा में

○

हम भी उसका वन्दन करके
सब आगे को क़दम बढ़ायें
नया सूर्य जो उदित हुआ है
आओ उस पर अर्घ्य चढ़ायें

○

बीत रहे सब राग पुराने
नया-क्षितिज निर्माण हो रहा
धरती ने नवरूप धरा है
समय चला नव बीज बो रहा

○

इन्दिरा जी ने आज देश में
समता का नव-बिगुल बजाया
बीस सूत्र के माणक पो कर
भारत का गल हार सजाया

○

रामेश्वर गुप्ता ने दिल्ली से
नूतन आलोक दिया है
अभी नागपुर में हम सबने
पूरा पहला चरण किया है

○

नया-संगठन, नयी-चेतना
नयी-प्रेरणा भरी गई है
नए भवन के लिए एकता की
कुछ ईंटें धरी गयी हैं

○

अग्र-वंशजों को सम्मेलन
एक सूत्र में पिरो धरेगा
अग्र-वंशियों के मानस में
एक नयी स्फूर्ति भरेगा

○

वैसे भी तो विश्व-धरा पर
महिलाओं का वर्ष मना है
अग्र नारियों की खातिर भी
एक नया सन्देश बना है

○

आओ हम सब अपने से ही
दहेज दानवी पात्रक धो लें
वरना यह तो समय करेगा
क्यों न हमीं अभिनन्दित हो लें

○

दहेज विरोधी स्वप्न सजे जो
कई जगह साकार हो गए
समय बाट नहीं देखा करता
बढ़े कदम तो पार हो गए

○

गाँधी गौतम की प्रतिमाओं
ने सोने के ढेर ऊँडेले
कालाधन महाकाल हो गया
ऊँची चढ़ती श्रम की बेलें

○

हमें हमारे पूर्व-पुरुष ने भी
समता का तत्व दिया था
अग्रोहे की माटी तक ने
प्यार पगा अपनत्व दिया था

○

अग्रसेन के आदर्शों के
आओ हम अनुयायी हो लें
ऊँच नीच के भेद मिटा कर
परवशता के बन्धन खोलें

○

अग्रोहे के टीलों में जो
सोया है इतिहास हमारा
वहाँ खुदाई करनी होगी
निकलेगी गरिमा की धारा

○

अग्रसेन का सौम्य रूप अब
डाक टिकट पर भी आयेगा
एक सूत्र में बँध जायें सब
तो समाज गरिमा पायेगा

○

अग्रोहे की पुन्य धरा को
तिलकराज अब तिलक करेंगे
श्रीकृष्ण मोदी, गोदी में
उसकी गौरव पुनः भरेंगे

○

अन्वेषण करके स्वराज्यमणि
खोजेंगी ऐतिहासिक निधियाँ
परिचय ग्रन्थ करेंगे पूरा
जयप्रकाश अपना सब विधियाँ

○

हम सब को भी आज एक
जुट होकर संग-संग बढ़ना होगा
अग्रसेन की जय कह कर के
अवरोधों से लड़ना होगा

○

उनके आदर्शों की बेलें
यदि मण्डप तक चढ़ा सकेंगे
पूर्व पुरुष के आदर्शों को
तभी अमर हम बना सकेंगे

○

वह धरा धन्य, वह जाति धन्य.....

वह नाम धन्य, वह काम धन्य, जो बने युगों की थाती है,
वह धरा धन्य, वह जाति धन्य, जो रत्नों को उपजाती है।
श्री अग्रसेन के आदर्शों का नया-निराला छत्र तना,
समता के पावन-दीप जला, अग्रोहा अनुपम नगर बना।
जहाँ गरिमा का बिखरा प्रकाश वह धरती तीरथ-धाम बनी,
जिसकी सुषमा को देख चकित हो गए मुगल, गोरी, गजनी।
उस अग्रोहे की धरती का इतिहास गर्व से लिखा गया,
वह माटी तनिक उलीचो तो — अब भी गरिमा मुस्काती है।
वह धरा धन्य, वह जाति धन्य,.....

हर भजन शाह से सेठ कहां, उजड़ा पुर, फिर से बसा दिया,
अद्‌भुत सा दुर्ग खड़ा करके, केसरिया झण्डा चढ़ा दिया।
दीवान कहां नन्नू मल से, जिनकी प्रख्यात कहानी है,
इस अग्रजाति की गोदी में निपजे बजाज से दानी हैं।
वह भारतेन्दु हरिश्चन्द्र जन-मन पर जिनकी अमिट छाप,
वह जगन्नाथ रत्नाकर से जो नाम देश की थाती हैं।
वह धरा धन्य, वह जाति धन्य,.....

लाला लाजपत से नर-केहरि, जिनसे भारत का भाल उठा,
सर शादी लाल से न्यायाधीश जो गए नए आदर्श जुटा।
तकनीकि विज्ञ, सुख्याति प्राप्त सर गंगाराम सरीखे नर,
इस अग्रजाति में बैठे हैं भगवान दास से रत्न प्रखर,
जो पराधीनता को हरने, चमके थे दिव्य-दिवाकर से,
है अग्रजाति की कोख धन्य जो ऐसे सूर्य उगाती है।
वह धरा धन्य, वह जाति धन्य,.....

साहित्य मनीषी बाल मुकुन्द गुप्ता ने उज्ज्वल नाम किया,
और मूलचन्द से पत्रकार ने सेवा भावी काम किया।
श्री जयदयाल से धर्म-प्राण इस जाति ने उपजाये हैं,
इसमें प्रयाग नारायण से नर श्रेष्ठ जनमते आये हैं।
दी नयी क्रान्ति को आवाजें श्री राम मनोहर लोहिया ने,
जन-कण्ठों से गूँजी वाणी जिसकी लय कार सुनाती है।
वह धरा धन्य, वह जाति धन्य,.....

समता के सजे-धजे रथ को फिर अग्रोहा में चलवाओ

निष्ठा को नमन करो पहले, फिर कलुमिष का मुँह धुलवाओ,
फिर कर्तव्यों की राधा को आमंत्रण देकर बुलवाओ,
कुछ ज्योति समेटो चन्दा से, कुछ किरण बटोरो सूरज से,
समता के सजे-धजे रथ को फिर अग्रोहा में चलवाओ।

जो बने सारथी उस रथ का उसमें पौरुष हो क्षमता हो,
हो शौर्य पराक्रम भी उसमें माँ के प्रति व्यापक ममता हो,
वैभव के अश्व जुड़ें बेशक लेकिन अंकुश भी हाथ रहे,
रथ हाँकें तो गतिशील रहें लेकिन थामे से थमता हो।

हो मार्ग प्रशस्त, स्वच्छ, समतल रथ समता का गतिमान रहे,
अवरोध न आएँ बीच कोई पथ की समुचित पहिचान रहे।
अभियान सार्थक बन पाए, जिससे नूतन इतिहास बने,
यह गुरुतर भार रहे जिन पर उनको यह समुचित भान रहे।

आदर्श बटोरें पग-पग पर रुकने के सीमित ठाँव रहे,
हो वातावरण नेह निर्मित हर पग समत्व की छांव रहे।
हो कहीं विषमता की थूहर तो संग-संग उसको काट चलें,
समता के रथ के स्वागत को हर्षित मन सारा गाँव रहे।

जब मिलें सिद्धियाँ मंजिल पर तो उन्हें परस्पर में बांटें,
कुछ अंजुरी भरे न फूलों से कुछ अंजुरी महज न हों कांटे।
जन-जन के मन औदार्य रहे यह बात तभी सम्भव होगी,
वरना तो सब अभियान व्यर्थ यदि नहीं विषमता को पाटें।

यदि अग्रसेन की वाणी को आधार नहीं मिल पायेगा,
समता का बिरवा अगर वहां पर कोंपल नहीं उगायेगा।
हो चमन किसी के कब्जे में और कोयल कहीं और कूके,
तब तो पीढ़ी कुम्हलायेंगी और स्वारथ जश्न मनायेगा।

छीना-झपटी की गिद्ध दृष्टि हंसो को ग्रास बनायेगी,
छल-कपट प्रपंचों की नानी कव्वों को कथा सुनायेगी।
समता के चीर-हरण पर यदि कोई कृष्ण प्रगट नहीं होगा तो,
दुशासन के घर की रानी कांटों को चुनर उढ़ायेगी।

विश्वास जलेगा होली में, संगठन स्वाह हो जायेगा,
चिन्तन सीयेगा चिर निद्रा, विप्लव आवाज उठायेगा।
तब सतत साधना सेवा की वैधव्य ओढ़कर सोयेगी,
और अग्रसेन की रीति-नीति का आत्म दाह हो जायेगा।

अग्रबन्धुओ ! तुम्हें शपथ है अग्रसेन की, सच बतलाना

क्या कुछ परिवर्तन आया है यह समाज ने कितना जाना,
अग्रबन्धुओ ! तुम्हें शपथ है अग्रसेन की, सच बतलाना।
अग्रजयन्ती फिर आयी है ठौर-ठौर पर जश्न मनेंगे,
अग्रसेन की गौरव गाथा के कितने ही छत्र तनेंगे ॥

लेकिन मेरे भाई बोलो इतने भर से ही क्या होगा,
जन्म जयन्ती मना लिए तो क्या समाज बदलेगा चोगा।
पिछले दो दशकों में काफी अग्रसेन का शोर हुआ है,
बार-बार लिखा है सबने लेकिन क्या कुछ गौर हुआ है ॥

सम्मेलन के साथ-साथ में महासंघ उठ खड़ा हुआ है,
लेकिन कितना काम हुआ है प्रश्न अभी यह अड़ा हुआ है।
दीन हीन जैसे के वैसे अभी सिसकते खड़े हुए हैं,
अभी समस्यायें वैवाहिक प्रश्न और कुछ बड़े हुए हैं ॥

अग्रसेन का एक लाल जो होटल की टेबिल धोता है,
और एक जो महा नगर के फुटपाथों के संग सोता है।
जिन्हें क्रोध आए हमारी इस बात पर चैलेंज उन्हें है,
खाकर कसम कलम की कहते हमें लिखे वे लाज जिन्हें है।

अग्रवंश की ललनाएँ कुछ चकला घर तक पहुँच रही हैं,
और अभी जाने को कितनी खड़ी-खड़ी कुछ सोच रही हैं।
क्या तुमने सोचा है इतना यह समाज में क्यों होता है,
एक चलाता बीसों मिलें एक पेट खाली सोता है ॥

मेरा क्या है रोज रात में मैं तो विष पीकर सोता हूँ,
पर समाज की हीन दशा पर कभी खूब खुलकर रोता हूँ।
कहीं भाग्य की बात न करना वर्ना तो इतिहास हँसेगा,
अपनी हीन ग्रन्थि को ढंकने कब तक पंजा और कसेगा ॥

या तो अग्रसेन को भूलो या फिर यह आकर्षण छोड़ो,
या तो भूलों को स्वीकारो या समता से रिश्ता तोड़ो।
शोर-शराबा बन्द करो सब सच्चे मन से कसमें खाओ,
अग्रोहा की माटी कर में लेकर यह सौगन्ध उठाओ ॥

कथनी और करनी का अन्तर हम समाज से दूर करेंगे,
या तो मौन साध बैठेंगे या फिर वादे पूरे करेंगे।
इतना करने को समाज में सब मिल अपने हाथ बढ़ाना,
अग्रबन्धुओ ! तुम्हें शपथ है अग्रसेन की, सच बतलाना ॥

श्री अग्रसेन ने समता की राधा को मुकुट पिन्हाये थे

वह महापुरुष नृप-अग्रसेन जो योगीराज कहलाया है
जिसने उज्ज्वल आदर्शों को कर्मठता से नहलाया है

जिसके शासन में समता का सूरज एक पल भी छिपा नहीं
जिसके शासन में कहीं गरीबी का साया तक दिखा नहीं

वह महा मनुज था पराक्रमी वह मानवता का शिल्पकार
जिसकी पोथी में किसी पृष्ट वैषम्य कभी था लिखा नहीं

संस्कृतियां जिसके शासन में मुस्कान लुटाया करती थीं
और रिद्धि सिद्धियां जिसका, घर आंगन सौरभ से भरती थीं

समता का महा सृजक था जो गौरव-गरिमा का कीर्तिमान
जिसके शासन में इठलाते गाते थे जाने कितने नव-विहान

जिसके शासन में समता का चलता-रथ, कभी नहीं ठहरा
जिसके शासन में वैभव पर लग पाया कभी नहीं पहरा

सम्वेदन को गहराई से अभिमान दिया जिस नृपवर ने
समता को कैसे कीर्तिपगा अभियान दिया उस ऋषिवर ने

जिसने अग्रोहा की धरती पर ज्योतिर्मय-पुंज सजाए थे
जिसके शासन में शौर्य-पराक्रम ने त्यौहार मनाए थे

जिसके दरवाजे से कोई भी लौटा खाली हाथ नहीं
जिसके शासन में किसी मनुज को पाया कभी अनाथ नहीं

वह अग्रसेन खुद को सदैव जनता का अनुचर कहता था
जिसकी वाणी में साम्य-सुखद करुणा का झरना बहता था

वह अग्रसेन मानवता का करता था अर्चन और पूजन
वह संस्कृति की मर्यादा को श्रद्धा से करता रहा नमन

जिसके कृत्यों पर धरा मुग्ध जिसके कृत्यों पर मगन गगन
उस अग्रसेन को जन-जनके अन्तर-मन का सौ बार नमन

उस अग्रसेन ने जन-जनको विश्वास नए कुछ सौंपे थे
उस अग्रसेन ने सत्य अहिंसा के बिरवे भी रोपे थे

जिस अग्रसेन ने जनमानस में मन्दिर नए बनाए थे
उस अग्रसेन ने समता की राधा को मुकुट पिन्हाए थे

ओ अग्रसेन तुम तो ऐसा आलोक धरा पर छोड़ गये

तुम इतिहासों की पलकों पर
तब तक आलोक बिखेरोगे
जब तक सदियां दोहरायेंगी अपने कृत्यों का अमर-गान
तुमने मानव-मानव का मन इतनी गहरायी से नापा
दे दिया प्यार सम्वेदन को इतना जितना तुमने भांपा
सबके जीवन को साम्य दिया यह बात स्वयं में अदभुत है
बन गयी सुहागिन समता तो मन बहुत विषमता का कांपा
जब प्रजातंत्र का नव स्वरूप
उस एक तन्त्र में समा गया
गर्वित हो झूमी समय शिखा हर आगत को दे अभयदान
तुम कर्मनिष्ठ तपसी ऐसे सम्भव कर दिया असम्भव सब
तब सत्य अहिंसा मुखर हुए हिंसा ने नृत्य किया जब-तब
तुम घोर साधना के साधक तुम तक वरदान चले आए
समता पुलकित मन थिरक उठी तुम युगदृष्टा बन मुस्काए
ओ, अग्रसेन तुम तो ऐसा
आलोक धरा पर छोड़ गए
जितने-जितने गहरे पैठो हंसता मुस्काता नव-विहान
हो सुखद व्यवस्था से मंडित अग्रोहा उपवन सा महका
उस माटी को वन्दन करके जन गण मन खुशियों से चहका
जिसकी माटी का शौर्य देख आक्रान्ता वापस लौट गए
वह माटी जब जब भी बिफरी जौहर दावानल सा दहका
उस माटी की सोंधी-सुगन्ध से
सराबोर थे पंच-तत्व
कर्तव्य-कर्म से वचन बद्ध था जिस माटी का निगह बान
जहां पूजी गयी मनुष्यता तो दानवता को दुत्कार मिली
जहां न्याय तुला पर विजयी हुआ जहां सत्य को जय जयकार मिली
जहां आदर्शों के बिरवे ने इतना सारा सौरभ बांटा
अन्याय, अधर्म अनीति को वहाँ पग-पग पर फटकार मिली
वह अग्रोहा वह अग्रसेन—
वह कीर्ति कलश का ज्योति पुंज
गीता के जैसा पावन था, जिसका गौरव गर्वी विधान

ओ अग्रवंश वह अग्रोहा तुमको आवाज लगाता है

जिसका पावन नाम स्वयं श्रद्धा के भाव जगाता है
ओ अग्रवंश वह अग्रोहा तुम को आवाज लगाता है

जिसके रज-कण में शौर्य व्याप्त माटी चन्दन सी महमाती
जहाँ अग्रसेन की गौरव-गरिमा सुधियों को नित नहलाती

वहाँ निर्माणों का महा यज्ञ, पिछले वर्षों से शुरु हुआ
आँचल फैला अनुजों के हित, माँ माँग रही है रोज दुआ

धन-जन सम्पन्न सुवन उसके लेकिन सब साधे मौन खड़े
वहाँ रिद्धि सिद्धियों की बेलें, ओने-कोने परवान चढ़े

यदि ताज महल की छवि से कम निर्माण वहाँ पर होवेगा
तो सच मानों वह अग्रसेन ऐसे कृत्यों पर रोवेगा

यदि अग्रबन्धु सब चाहें तो वहाँ ताज से बढ़कर ख्याति हो
खजुराहो और अजन्ता सी मूरत वहाँ जशन मनाती हो

यह माना अग्रजाति के घर सुख के सौरभ की थाती है
पर वर्ग भेद और ऊँच-नीच की छलना उन्हें गिराती है

चाहते तो अगर जाति गंगा अपनी फिर से परवान चढ़े
माँ की खातिर कुछ करने को इस अग्रजाति में चाह बढ़े

संगठन बनालें रोज एक सम्मेलन करलें बड़े-बड़े
और संस्मारिका छप जाएं, हो जाँए कीर्ति के खम्भ खड़े

इतने भर से तो अग्रसेन को शान्ति नहीं मिल पाएगी
और इतने भर से ही अग्रोहा की धरती क्या मुस्काएगी

कुछ काम करो ऐसे जिससे इतिहास स्वयं गरिमामय हों
बातों से काम नहीं चलता हम कृत्यों से महिमा मय हों

वरना फिर सभी तमाशों को पहली फुरसत में दफना दो
या फिर जाति के लिए मित्र तुम भी कुछ लोहू अपना दो

महाराजा अग्रसेन जयन्ती पर
आज वन्दन है शत्-शत् हमारा उन्हें

आज वन्दन है शत्-शत् हमारा उन्हें !
जिनका पावन सुखद जन्म दिन आज है !!
जिनके गौरव व गरिमा के ध्वज उड़ रहे !
अग्र जाति को उन पर बड़ा नाज है !!

उनका इतिहास जग में अनूठा रहा,
शौर्य, बल और पराक्रम की क्या बात है !!
अग्रजाति रही अग्रणी सर्वदा,
यह उन्हीं पूज्यवर की तो सौगात है !!

जिनके शासन में सुन्दर रहा सन्तुलन,
हर बशर को था ऊँचा उठाया गया,
एक रुपया दो ईंटों की परिपाटी पर,
था बहुत पूर्व जन तन्त्र लाया गया !!

नंगा-भूखा नहीं शेष था कोई तब,
सबके अधिकार भी तब बराबर रहे !
सत्य फूला फला श्रम यशस्वी हुआ,
दान से धर्म से हम उजागर रहे !!

पूर्व गौरव व गरिमा को यों भूलकर,
जाने क्यों आज इस गर्त में पड़ गए !
करके अबहेलना देश की जाति की,
रूढ़ियों की गहन पर्त में जड़ गए !!

आज संकेत लें पूज्यवर से पुनः,
जाति उत्थान के हेतु टंकार दें !
धमनियों में जमे रक्त को गर्म कर,,
सब युवक संगठित होके हुंकार दें !!

शंख फूंकें नया, गर्जना ले नयी,
हम नयी चेतना को बुलाने लगें !
देश जाति की रक्षा के प्रहरी बनें,
हर कदम साथ युग के उठाने लगें !!

संकुचित दावरों में न उलझें कभी,
राष्ट्र उत्थान में जाति को जोत दें !
आज जिनकी जयन्ती मनाते हैं हम,
वे नई प्रेरणा दें नयी ज्योति दें !!

अग्रोहा निर्माण

और

अग्रबन्धु

उलीचो तो जरा उस प्यार की अनमोल थाती को
जरा-सा तेल दे उकसाओ जलते दीप-बाती को
वो जो अग्रोहा की धरती है वो तो माँ हमारी है
जहाँ पर अब पुनः निर्माण का शुभ कार्य जारी है

○

वह अग्रोहा पुनः आबाद होकर मुस्कुरायेगा
मगर क्या पूर्व-सी गरिमा को वह अक्षत चढ़ायेगा
असम्भव तो नहीं, लेकिन तुम्हें संकल्प लेना है
नए निर्माण में हर बन्धु को सहयोग देना है

○

जहाँ समता की सतवन्ती सदा सम्मान पाती थी
जहाँ अपनत्व की गरिमा खुशी के गीत गाती थी
जहाँ हर व्यक्ति सुख-शान्ति की सरिता में नहाता था
नवागत भी जहाँ समृद्धि का चन्दन लगाता था

○

कि अग्रोहा की वो धरती खण्डहर बन सो रही थी जो
औ, अपने लाडलों के नाम पर नित रो रही थी जो
नये निर्माण की बेलें वहाँ बढ़ने लगी हैं अब
अँधेरा वहाँ पे उजियारे के बन्धन खोल देगा सब

○

कहो, उस भूमि पर क्या स्वर्ग फिर सुषमा सजायेगा
नया निर्माण समता का नया सूरज उगायेगा?
अभी यह प्रश्न वाचक चिन्ह तो मौन बैठा है
अभी अपनत्व का सपना वहाँ खामोश लेटा है

○

अभी लेखक, कवि दुविधा की धारों में भटकते हैं
अभी विश्वास के पंछी अधर में ही लटकते हैं
अगर प्रतिबद्धता हर अग्रवंशी में समा जाए
तो अग्रोहा पुरातन सा पुनः सम्मान पा जाए

समाज के नव-युवकों से.....

जाग रे जाग युवक समुदाय
बदलना होगा तुझको आज
बढ़ा युग नव-सर्जन की ओर
पड़ा है पीड़ित किन्तु समाज

उठे तू लिए अगर हुंकार
मनेगी तेरी जय-जयकार
मिलेंगे धरा गगन के छोर
हँसेगी नई-नवेली भोर

उठो तुम कर में लिए मशाल
दहेज का दानव है विकराल
खड़ी हैं बहिनें बहुत अधीर
भरा है बस नयनों में नीर

देश में यों तो बना विधान
तड़पते मगर फूल से प्राण
अगर तुम बने रहे अन्जान
विवशता में होंगे बलिदान

सहेंगे कब तक ऐसी चोट
चोट में नादानी की खोट
खोट में हैं कितने मदहोश
सभी में लाना फिर से जोश

तेरा भुज बल यदि जागे आज
जगादे क्षण में सकल समाज
जमाना बढ़ा कहाँ किस ओर
खड़े हम पकड़ पुरानी डोर

हमारे पुरखों का यह हेत
स्वर्ग से भी करते संकेत
बढ़ो युग के चरणों के साथ
उठाये गौरव-गर्वी माथ

तुम्हारी संस्कृति भव्य विशाल
न जिसको लील सकेगा काल
बढ़ो तुम उधर ध्येय को ठान
खड़ा है जहाँ पर स्वर्ण-विहान

वह अग्रसेन, वह अग्रोहा
हम सब हैं जिनसे जुड़े हुए

आओ सब मिल-जुल कर बैठें, कुछ सोचें, कुछ बात बिचारें
वरना तो बेकार रहेंगे, अग्रसेन की जय के नारे
उस महामना का जन्म दिवस जिसने समता का मंत्र दिया
जहां रही अमीरी कैद नहीं एक अद्‌भुत शासन तंत्र दिया

○

दो ईंट-एक रुपया वाली परिपाटी क्या अपनाई थी
बांटा था प्यार जहां सबने और सबने पीर बँटाई थी
परवान चढ़ा था सत्य जहां जन-जन ने नग़मे गाये थे
बस इसीलिए तो अग्रसेन इतिहासों में जुड़ पाये थे

○

उस अग्रसेन का अग्रोहा जिसने अँधियाली छांटी थी
जहां शौर्य-पराक्रम बिखरा था गरिमा ने कुंकुम बाँटी थी
जहाँ सोई महासती शीला कितनी उज्ज्वल जिनकी गाथा
जिसके आगे श्रद्धा से सबने टेक दिया अपना माथा

○

वह अग्रसेन, वह अग्रोहा, हम सब हैं जिनसे जुड़े हुए
पर उनके संग अनुबन्धों से है नाम हमारे उड़े हुए
हम कैसे सीना तान कहें हम अग्रसेन की सन्तति हैं
वाणी कुण्ठित होती कहते हम सब की उनसे उत्पत्ति है

○

उस सौम्य तपस्वी की धरती हमसे कहती आंचल पसार
मैंने तो सुख-सौरभ बांटा, कांटे ही दे दो तुम उधार
मेरे प्रिय बहुत लाडलो, माँ तो नहीं तुम्हे दुत्कारेगी
वो देगी आशीर्वाद तुम्हें, लेकिन दुनिया धिक्कारेगी

○

यह बातें सभी समझनी हैं, और मनन सभी पर करना है
हम अपनी ही खातिर जियें, तो भी तो एक दिन मरना है
हम जियें अगर तो शान सहित, मर जायें तो यश जोड़ सकें
अपने पीछे सत्कर्मों की झांकी कोई हम छोड़ सकें

कुछ प्रश्न : अग्रवंशियों से

अग्रोहा की धरती पर, निर्माण कार्य तो जारी है,
पर पूर्व पुरातन गरिमा, क्या अग्रोहा में बिखराओगे ?
अग्रोहा की करुण-कथा, लिखने वालों ने खूब लिखी,
क्या कभी धधकते प्रश्नों के, उत्तर माँ तक भिजवाओगे ?

उस पुन्यधरा ने देखे हैं, कितने-कितने उत्थान-पतन,
बस उसके शौर्य पराक्रम पर, कुंकुम बिखराता रहा गगन।
हर बार हुए विध्वंसों पर, वहाँ पुनः नया निर्माण हुआ,
सुख-समता का सौरभ जन-जन, को वहां बांटता रहा चमन॥

क्या ऊँच-नीच का भेद मिटा, जन-जन को गले लगाओगे,
उस धरती माँ को क्या फिर से, अपने-पन से नहलाओगे।
दीवारें तो बन जायेंगी, मीनारें भी उठ जायेंगी,
हरभजनशाह से दानी को, पर ढूँढ कहां से लाओगे॥

जिस मां के आशीर्वादों से, तुमने दौलत अर्जित की है,
कुछ अंश कमाई का अपनी, क्या माँ के चरण चढ़ाओगे।
नामों का मोह त्याग दोगे, पद लिप्सा भी ठुकरा दोगे,
या नाम पटों पर खोद-खोद, माँ के तन को छिदवाओगे॥

तुम साम्य योग के शंकर पर, समता का लेप करोगे क्या,
मां के टूटे-छीजे मन में, फिर से विश्वास भरोगे क्या।
क्या सच की सोन चिरैय्या को, वहाँ डाल-डाल बिठला दोगे,
वहां गली-गली चौराहों पर, श्रद्धा के फूल धरोगे क्या॥

अग्रसेन की अमृत वाणी की, क्या फिर गंग बहाओगे,
और अहिंसा अग्रसेन की, क्या परवान चढ़ाओगे।
राग-द्वेष का नाम न होगा, रज कण होगी ज्योत प्यार की,
अग्रोहा की धरती पर, क्या ऐसे दीप जलाओगे॥

इस पीढ़ी की बैसाखी को फिर कोई और झपट लेगा

फिर अग्रसेन का जन्म-दिवस
कुछ याद दिलाने आया है
अकुलाती पीढ़ी ने फिर से
अपना एक प्रश्न उठाया है

उत्तर से हम आश्वस्त नहीं
जय अग्रसेन की बोल रहे
हम प्यार परस्पर बाँट रहे
या मन में कटुता घोल रहे

समता की बातें बहुत हुयीं
पर अभी विषमता लील रही
साधे तो बहुत निशाने पर
उड़ अभी दम्भ की चील रही

फिर सभा-समाजों की रिपोर्ट
अखबारों में छप जायेगी
पूरी की पूरी पोढ़ी ही
बस इसी तरह खप जायेगी

कुछ संस्मारिका के पृष्ठों पर
भो, उतरेंगे अग्रसेन
कुछ लेखों में कविताओं में
उतरेगो उनकी अमर देन

कुछ बातें दहेज - दिखावे की
महिला मंचों से भी होंगी
कुछ बातें रीति-रिवाजों की
जाति के पंचों में होंगी

क्या अग्रजाति में जन्मेगा
फिर जमनालाल बजाज कोई
लाला लजपत-सा प्रगटेगा
क्या लाल पुनः जांबाज कोई

कथनो और करनी का अन्तर
माइक के चोंगे चीखेंगे
कुछ बालक, बूढ़े और युवक
जयकार गुंजाते दीखेंगे

इससे समाज का क्या कुछ भी
परिबेष बदलने पायेगा
ओ अग्रवंशियो, सावधान
जब युग आवाज़ लगायेगा

तब हाथों में होगी मशाल
विप्लव खुद तिलक लगा लेगा
और आने वाली पीढ़ी को
पिछला इतिहास बता देगा

कुछ करना है तो करो बन्धु
वर्ना फिर वक्त निपट लेगा
इस पीढ़ी की बैसाखी को
फिर कोई और झपट लेगा

यह सदियों तक अकुलायेगी
या करवट ले उठ जायेगी
कुछ साँसें अब तक घुटी-घुटीं
कुछ सांस और घुट जायेगी

उस अग्रोहा की धरती को सब शीश झुका करते वन्दन

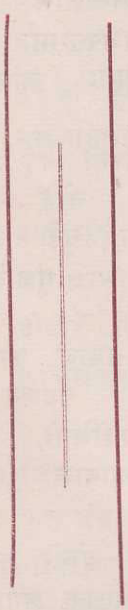

उस अग्रोहा की धरती को
सब शीश झुका करते वन्दन

II

जो राग द्वेष पी गयी स्वयं
पर लोगों को अपनत्व दिया
जिसने अपना आँचल फैला
लोगों को शुभ्र समत्व दिया
उस माटी को सच्चे मन हो
जन-मानस करता अभिवन्दन

आदर्श जहां पर पले-बढ़े
यश-गौरव जहाँ परवान चढ़े
उस मातृ भूमि की गरिमा के
कवियों ने कितने गीत गढ़े
उस के रज-कण पावन इतने
जितना शिव मन्दिर का चन्दन

II

जहां सत्य उजागर हुआ सदा
और झूठ हार कर थक बैठी
उस पुन्य भूमि में पावनता
गंगा जल के जैसी पैठी
जिसकी माटी में उत्कर्षों
और उत्सर्गों के भाव दफन

II

वह सब को प्यार लुटाती थी
सुवनों में शौर्य जगाती थी
वह आतताइयों को, अपनी
ऊँगली पर सदा नचाती थी
वह परम पराक्रम की जननी
वह बलिदानों का विजयी चमन

II

जहां ऊंच-नीच का भेद न था
समता सदैव परवान चढ़ी
जहाँ पौरुष खेला करता था
जहाँ सतियों ने नव कथा गढ़ी
वह अग्रसेन की यादों का
सौरभ सरसाता नन्दन वन

II

जहाँ आया कोई आक्रामक
तो वापस लौट नहीं पाया
कुंकुम-सा लोहू बिखर गया
सतियों ने जौहर अपनाया
जिसकी रक्षा को निकल पड़े
योद्धा सर बाँधे हुए कफन

उस अग्रसेन को सौ प्रणाम

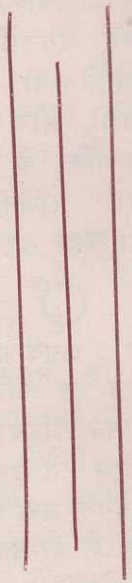

वह कौन पुरुष जिसकी स्मृति से
सम्वेदन अकुलाता है !
वह कौन नाम जो, युग-युग से
शंकर-सा पूजा जाता है !!
वह कौन रूप जिसका सम्मोहन
जड़-चेतन करता प्राणवान !
वह कौन भूप जिसके कृत्यों को
दुनिया कहती है महान !!
जो मानवता की अमर देन !
वह अग्रसेन, वह अग्रसेन !!

वह कौन व्रती अग-जग जिसके
कौशल को करता प्रणाम !
वह कौन शक्ति जिसके पौरुष ने
इतना रोशन किया नाम !!
वह कौन सिद्ध जिसकी वाणी में
बसती थी खुद कल्याणी !
कौन कौन तपस्वी जिसके घर
भरता था इन्द्र स्वयं पानी !!
जो पावनता का परम धाम !
उस अग्रसेन को सौ प्रणाम !!

वह मनु-सा कौन महान व्रती
जिसमें अक्षय समता पैठी !
जिसकी जिह्वा पर महामयी
खुद वीणा पाणि हँस बैठी !!
जो विश्वासों का सौम्य-सृजक !
जो बलिदानों का रौद्र-रूप !!
जो वैभव का आराध्य स्वयं
संस्कृतियों का निश्छल स्वरूप
गौरव-गरिमा के कीर्तिमान !
वह अग्रसेन कितने महान !!

वह कौन सत्य निश्छलता को
जिसने इतना अधिमान दिया
जिसने समता का अर्चन कर
अभियानों को गतिमान किया
वह कौन मनुज जिसके शासन में
करुणा पूजी जाती थी !
वह कौन जयी, जय-विजय स्वयं
जिसको पाने अकुलाती थी !!
जो वरदानों की सुबह-शाम !
उस अग्रसेन को सौ प्रणाम !!

लेखा-जोखा लें समाज का अब इसका अवसर आया है

विगत बीस वर्षों से हमने
क्या खोया है क्या पाया है
लेखा-जोखा लें समाज का
अब इसका अवसर आया है
कोई भागीरथ प्रगटेगा
ऐसा चन्दन घस जायेगा
अग्रोहा को बसना है तो
आज नहीं कल बस जायेगा

○

पर समाज की गतिविधियां
जो मरण प्राय लगती हैं भाई
इसमें प्राण फूंकने वाली
संजीवनी नहीं पड़ी दिखाई
कौन लाल जो नव चेतन का
शंख फूंकता आगे आये
कौन लाल जो अपने हाथों
दीपक की बाती उकसाये
कौन लाल अपने हाथों से
जो विप्लवी मशाल जलाये
कौन लाल जो जीर्ण-क्षीर्ण
जाति पर अपना रक्त चढ़ाये
कौन कलम जो नई चेतना
लाने को उद्‌बोधन भर दे
कौन यशस्वी कलाकार जो
मूक जाति को नूतन स्वर दे

○

जली असम में है जो होली
उसकी ज्वाला धधक रही है
किन्तु अग्रजाति की क्षमता
दिशाहीन-सी भटक रही है
सँभलो, और सँभालो तुम तो
महाशक्ति के महा सिन्धु हो
बेबस राजनीति बेचारी
यहां वहां सर पटक रही है

○

सावधान ओ अग्रवंशियो
नई आग लगने से पहिले
अपनी क्षमता को पहिचानो
बन जाओ नहले से दहले
ला सकते तुम गगन धरा पर
धरा, गगन तक ले जा सकते
शौर्य पुरुष के वंशज हो तुम
कवच जाति को पहिना सकते

○

तुम उस महामना की वाणी
जिसमें बसती थी कल्याणी
पौरुष जिसको नहलाता था
चढ़ती थी जहाँ भेंट जवानी
कर्मयोग का साधक था वह
आदर्शों का निर्माता था
जिसकी गरिमा के गीत स्वयं
इतिहास झूम कर गाता था

संगठन शक्ति और

अ० भा० अग्रवाल सम्मेलन

अग्रबन्धुओ, शशि ने पहले भी
तुमसे कुछ बात कही है
देख रहे हैं अभी मौन हम
दुनिया कितनी बदल रही है

आज देश की धरती पर भी
परिवर्तन की आंधी आयी
बीस-सूत्र हो उठे प्रकाशित
इन्दिरा ने वह ज्योति जगाई

ऐसे में हम भी बढ़ आगे
नए दौर को तिलक लगाएँ
करें संगठन को अभिनन्दित
जन-जन में अपनत्व जगाएँ

अभी-अभी गत वर्ष संगठन
नया रूप लेकर उभरा है
नयी जली हैं दीपावलियाँ
और नया आलोक भरा है

रामेश्वर गुप्ता की कर्मठता
जो मंजिल की ओर बढ़ी है
हुआ संगठन आज पल्लवित
ऊँचे, इसकी बेल चढ़ी है

श्री कृष्ण मोदी के जैसा, नेता
हमको मिला आज है
गर्वोन्नत है अग्रबन्धु सब
गरिमामय सारा समाज है

अग्रसेन का भव्य रूप अब
डाक टिकिट पर आने वाला
धन्य दिवस चौबीस सितम्बर
होगा तोहफा भेंट निराला

आयेगा इतिहास प्रमाणित तभी
अब हम लोगों के आगे
अग्रोहे की पुन्यधरा पर
अब शायद खुशियाली जागे

गरिमा के अवशेष मिलेंगे
वहाँ पर अगर खुदाई होगी
बजी संगठन की शहनाई
निश्चित ही सुखदायी होगी

आज संगठन के सम्बल का
लोहा अग-जग मान गया है
महाशक्ति का परिचायक यह
जन-जन यह पहिचान गया है

लेखक, कवि और कलाकार के
साथ जोड़कर अपना नाता
अग्रबन्धु भी आज संगठन की
शक्ति का मर्म बताता

युग के बढ़ते चरण, आज पर
हमने आंखें नहीं उठायीं
अभी हमारे बीच निहित हैं
ऊँच-नीच की निर्मम खायी

अभी सम्पदा की वेणी में
गजरा गूंथ रही मजबूरी
अब भी रिद्धि-सिद्धि का स्वामी
देखो नाप रहा है दूरी

दहेज विरोधी अंकुश आया
फिर भी सौदेबाज़ी होती
और धनिक के दर्वाजे पर
आज गरीबी सिर धुन रोती

अगर संगठन इन बातों पर
आंख बन्द कर रह जाएगा
तब तो स्वप्निल महल हमारा
आंसू बनकर ढह जाएगा

तुम चाहो तो सौ नगरों को आबाद आज कर सकते हो

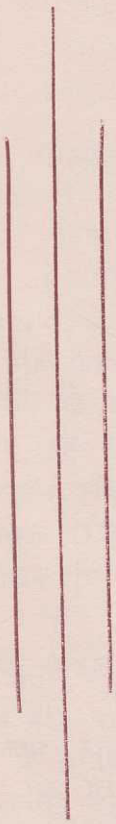

लिख रही कलम यह चन्द शब्द
हर अग्रबन्धु तक पहुँचाने
भूली-बिसरी गौरव-गरिमा के
चित्र हृदय-पट पर लाने

तुम कोटि-कोटि संख्या में हो
धन-दौलत से भी सराबोर
कुल कीर्ति तुम्हारी यहां-वहां से
फैल रही है चहुँ ओर

तुम अग्रसेन के वंशज सब
अग्रोहा सबका आदि ग्राम
हर अग्रबन्धु जिस भूमि को
श्रद्धा से करता है प्रणाम

उस अग्रोहा की दशा देख
पत्थर का दिल हिल जाता है
है कोटि-कोटि सन्तानों का
जो जन्म-स्थान कहाता है

उड़ते हैं कव्वे-चील वहां
खण्डहरों में उल्लू बोल रहे
वह अग्रवालों की जन्म भूमि
जहां सूअर-गीदड़ डोल रहे

निस्तब्ध निरीह पड़ी जननी
अपने सुवनों को टेर रही
हैं कहां आज उसके सपूत
हर नगर-ग्राम में टेर रही

जहां अग्रसेन का साम्ययोग
समता के दीप जलाता था
हर अभ्यागत दो ईंट—एक
रुपया, वहां जाकर पाता था

आदर्श कहां बिक गए आज
ओ अग्रसेन की सन्तानो
किस महापुरुष की अमर देन
अब भी अपने को पहिचानो

जिसका अतीत हो स्वर्ण जड़ा
वह ऐसे कहीं उजड़ता है
उस अग्रोहा की माटी में
खोजो इतिहास तड़पता है

क्या बात एक अग्रोहा को
जग में सुषमा भर सकते हो
तुम चाहो तो सौ नगरों को
आबाद आज कर सकते हो

अग्रोहा
पुनर्निर्माण महायज्ञ

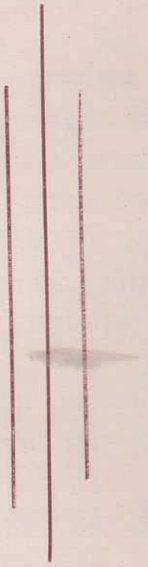

अग्रोहा को पुनः बसा कर
अग्रसेन की कीर्ति उछालें
अग्रबन्धु इस महा यज्ञ में
यथा शक्ति आहुतियां डालें

पुनः बसाने को अग्रोहा
नींवों का निर्माण हो रहा
अग्रबन्धुओं के संग अब तक
जुड़ी हुई कालिमा धो रहा

महायज्ञ सम्पादित करने
सब को कदम बढ़ाने होंगे
नगर-नगर और गाँव-गाँव से
सब को पुष्प चढ़ाने होंगे

नई रोशनी, ध्वंस खण्डहरों पर
फिर से बिखरानी होगी
अग्रसेन के आदर्शों की ध्वजा
पुनः फहरानी होगी

नव निर्माणों की बेला में
ईंट-ईंट जुड़ रही जहां पर
गौरव-गरिमा पुनः कीर्ति-
ध्वज, लिए आज मुड़ रही वहां पर

अग्रोहा की पुनर्स्थापना
किसी एक का काम नहीं है
कोटि जनों की मातृ भूमि वह
क्या सबका वहां नाम नहीं है

बने वहां सुन्दर प्राचीरें
जिन पर निर्मित भव्य भवन हों
बनें अष्ट दश खम्भ वहां पर
यज्ञशाला हो नित्य हवन हों

बना शक्ति सागर सुरम्य सा
लखी सर की याद दिलाये
बनें पंक्तिबद्ध देवालय, जो
पूर्व सुयश की गंध लुटाये

वृद्धा श्रम निर्मित हो वहां जो
वृद्धों की आशीषें पाये
अग्रसेन का स्मृति मंदिर
जन-जन के मन को हुलसाये

कदम-कदम पर कीर्ति कलश हो
शीश महल-सा सभागार हो
बनी कुटीरें यहां-वहां पर
पूर्व पुरातन यादगार हो

कुल देवी शीला का मन्दिर
मन मोहक छवि लिए हुए हो
लिखा जाए इतिहास नया
फिर, यश गंगाजल पिये हुए हो

एक रुपया, एक ईंट की प्रथा
पुनः आंचल फैलाये
नव निर्मित अग्रोहा फिर से
अग्रसेन को वहां बुलाये

अग्रोहा पुनः बसाने को संकल्प नए करने होंगे

गौरव-गरिमा से सराबोर
माटी तक जिसकी चन्दन है
उस पुण्य भूमि अग्रोहा को
सब का श्रद्धानत वन्दन है

नजरें नीचे झुक जाती हैं
अवरुद्ध कण्ठ हो जाता है
अग्रोहा का चिंतन करते
तो सांस गले तक आता है

यह अग्रवंश का तीर्थधाम
जो सदियों से वीरान पड़ा
वह आज धूल से ढँका हुआ
जिसका अतीत था स्वर्ण जड़ा

जहाँ रिद्धि-सिद्धियाँ बसती थीं
क्या फिर से उसे बसाओगे
वहाँ तनिक उलीचो माटी को
इतिहास तड़पता पाओगे

जिसकी गोदी में पली-बढ़ी
वह अग्रजाति है कहाँ आज
धन-जन, सम्पन्न सुवन जिसके
पर माँ की रख नहीं सके लाज

था अग्रवंश के आदि पुरुष का
अरे यहीं अवतरण हुआ
अष्ट सिद्धियों नव निधियों का
इसी भूमि पर वरण हुआ

स्नेह-प्यार-आदर्शों की
जिस ठौर त्रिवेणी बहती थी
गौरव-गाथा उस धरती की
इन सन्दर्भों में कहती थी

अग्रवाल कुल गरिमा के
थे छत्र जहाँ पर तने हुए
सबको समान हक मिलने के
कानून जहाँ थे बने हुए

प्रत्येक नवागत को रुपया
और ईंट भेंट की जाती थी
यह अग्रजाति अभ्यागत को
पलकों पर जहां बिठाती थी

गौरी-गजनी ने इस भू पर
जब अपनी नजर गड़ाई थी
अग्रोहा हथिया लेने को
दुश्मन की सेना आई थी

तब अग्रवाल रणबंकों का
वो रक्त यहीं पर बिखरा है
जिसके कारण कुल कीर्ति बढ़ी
गरिमा का मुखड़ा निखरा है

तब अग्रवाल ललनाओं का
सिन्दूर यहीं पर फैला था
दुश्मन सत्ता की प्यास लिए
जब अग्रोहा से खेला था

वहाँ खण्डहर और मैदान पड़े
यह देख शीश झुक जाता है
क्या इसी तरह कोई बेटा
जननी का कर्ज चुकाता है

अग्रोहा पुनः बसाने को
संकल्प नए करने होंगे
उन ध्वंस हुए अवशेषों में
फिर रंग नए भरने होंगे

ओ, अग्रसेन तुम तो ऐसा आलोक धरा पर छोड़ गए

ओ अग्रसेन तुम तो ऐसा
आलोक धरा पर छोड़ गए
कुछ गरिमा के अध्याय नए
तुम इतिहासों में जोड़ गए

दृढता को वो आधार दिया
बस प्यार पनपता चला गया
मानव-मानव के अन्तर में
विश्वास पनपता चला गया

तुमने जब-जब सिद्धांत गढ़े
जड़-चेतन सभी उलीचे थे
तुमने बिरवे आदर्शों के
समता के बल से सींचे थे

जल गयी विषमता की सुरसा
पलने में पल ने साम्य लगा
जन-मन का अंतर्द्वन्द मिटा
और उसमें नव उत्साह जगा

उत्सर्ग भावना को तुमने
कितने ऊँचे प्रतिमान दिए
ममता को मोहक मंत्र दिया
भावों को नए विहान दिए

निर्धन और धनिकों का अन्तर
अभिनव कौशल से पाट दिया
अपनत्व पगा सौरभ कुंकुम सा
तुमने सब को बांट दिया

समृद्धि सजा दी घर-घर में
सबको समान अधिकार दिए
तुमने पीड़ित मानवता के
अन्तस में स्वर्ग उतार दिए

तेरा सम्मोहन पाकर के
सुख-समता की बेलें फूलीं
थी रिद्धि-सिद्धियाँ घर घर में
जनता सुख-सुविधा में झूली

तुमने अपने सिद्धान्तों को
यों अमिय पिलाकर के पाला
सब अंधकार को लील गया
उन्मुक्त बिखरता उजियाला

अभियान सार्थक हुए सभी
वे तेरी याद दिलाते हैं
पर अब तो कथनी और
करनी के अन्तर ढोल बजाते हैं

तेरे आदर्शों की पोथी के
पृष्ठ दीमकें चाट रहीं
तेरी उस पावन प्रतिमा पर
श्रद्धा के फूल कहाँ चढ़ते

तेरी सन्तानें आपस में
जाने क्यों कटुता बांट रहीं
पर तेरे जन्म-समारोह पर
तेरी यश-गाथा तो पढ़ते

यह समाज का कच्चा चिट्ठा बिखराओ की एक कड़ी है

ओ अग्रबन्धुओ, आओ
मिल जुलकर कुछ नए प्रयास करें
फिर समाज की नव रचना कर
उसमें नूतन प्राण भरें

शक्ति संगठन में होती है
एक-एक मिल ग्यारह बनते
पर समाज में नित्य प्रदर्शन के
नूतन चौबारे सजते

यों ही चलता रहा अगर तो
टूट और भी टूट बनेगी
बची खुची प्रतिभा समाज की
उस पर फिर कुछ धूल चढ़ेगी

कहते हैं हम जाने क्या कुछ
किन्तु न जाने क्या करते हैं
यह समाज का चित्र नहीं है
कथनी में जो रंग भरते हैं

बिन दहेज क्वांरी कन्यायें
ऊँट सरीखी घर में बैठी
दहेज विरोधी व्याख्यानों से
सभी पत्रिका भरी पड़ी हैं

मंचों से भाषण झड़ते हैं
किन्तु प्रदर्शन बढ़ते जाते
यह समाज का कच्चा चिठ्ठा
बिखराओ की एक कड़ी है

भाग रही हैं बहू-बेटियाँ
मगर बड़ों की बात बड़ी है
आठ लाख तक शादी पहुँची
सुरसा हँसते हुए खड़ी है

परितक्तायें सिसक रही हैं
वे जो बड़े घरानों की हैं
सभी जानते हैं ये बातें
फिर भी बात बताने की है

सच कहना कड़वा होता है
लेकिन सच सच ही होता है
जिसकी रही भावना जैसी
वह वैसे बिरवे बोता है

अग्र जाति की गंगा में भी
धारायें कई मिली हुयी हैं
जैसे को तैसे मिलते
कब गंगा से संगम होता है

है समाज का लक्ष्य यही तो
फिर सारे सम्मेलन नाहक
एक अमीरी एक गरीबी
बस दो जाति वक्त बताता

यह दो पृथक-पृथक खेमे हैं
इनमें प्यार परस्पर कैसा
इसे झूंठ साबित करने क्या
अग्रबन्धु कोई आगे आता

ओ अग्रबन्धुओ सुनो

अभी भी एक प्रश्न तो बाकी है

अग्रोहा पुनः बसाने का
हो गया महूरत तो लेकिन
ओ अग्रबन्धुओ सुनो
अभी भी एक प्रश्न तो बाकी है
क्या पूर्व-पुरातन-सी गरिमा
सौंपोगे फिर अग्रोहा को
क्या शपथ पूर्वक हम सबने
जननी की कीमत आंकी है

उस पुन्य धरा का रजकण
यह भी बार-बार दोहराता है
निर्माणों का वह महायज्ञ
कुछ आहुतियाँ भी चाहता है
आंचल फैला कर वह धरती
सुवनों की ओर ताकती है
आशीषें देने वाली मां
अब खुद आशीष मांगती है

तुम कोटि-कोटि संख्या में हो
मां का विश्वास न खण्डित हो
श्रीअग्रसेनकी गौरव-गरिमा-सा
अग्रोहा मण्डित हो
उस अग्रसेन की कीर्ति ध्वजा
यों गगन चूमती हुयी दिखे
वह धरती मां आदर्शों का
गौरव-गर्वी इतिहास लिखे

हो कदम-कदम पर कीर्ति-कलश
अभ्यागत को वहां प्यार मिले
वहां एक रुपया एक ईंट की
समता को आधार मिले
हो चारों धाम वहां चित्रित
खजुराहो-सी, प्रख्याति हो
उपवन ऐसा मधु कुँज बने
बुलबुलें तराने गाती हों

ओने-कोने तक बेल अगर
समता की वहां पर चढ़ीं नहीं
तो समझो तुमने वह मूरत
कुछ ठीक तरह से गढ़ी नहीं
बन्धु-भावना उस धरती की
धूल-धूल में सनी रहे
ऊँच-नीच की दीवारें हों
वहां कहीं पर खड़ी नहीं

राग-द्वेष विनसाय महकती गंध
वहाँ पर पहरा दे
अपनत्व भावना प्यार-पगी
उस धरती का रंग गहरा दे
श्रम की बेलें, परवान चढ़ें
शिक्षा मन्दिर महिमा मय हो
विश्वास वहाँ पनपे-फूले
जय-विजय पताका फहरा दे

अग्रोहा निर्माण का सन्दर्भ अग्रवंशियों से सम्बोधन

उलीचो तुम जरा उस प्यार के
अनुपम खजाने को
जहाँ आदर्श जिन्दा है
पुनः झांकी दिखाने को
वह अग्रोहा की धरती
जो नए इतिहास रचती है
जहां सतियों ने जौहर थे रचे
मालुम जमाने को

चलो अच्छा हुआ वहां
उत्खनन का काम जारी है
मगर बन्धु हमारे शीश भी
कुछ जिम्मेदारी है
वो अग्रोहा की धरती
जो हमारी मां कहाती है
हजारों बार वह जीती
अनेकों बार हारी है

मगर उसमें छिपा गौरव
नया सन्देश देता है
नवागत पहुँच उस धरती पे
सुख की सांस लेता है
वहां अपनत्व की गंगा
जो आठों पहर बहती थी
नए निर्माण का आलोक
वहाँ फिर आज चेता है

सजाओ उस धरा को
इस तरह सब दंग रह जाएँ
कहानी पूर्व की वहाँ पर
खुदी जो नींव कह जाएँ
वहाँ समता के दीपक का
उजाला खूब फैला था
वहाँ गरिमा के कुंकुम की
पुनः यश धार बह जाए

मगर यह सभी तभी सम्भव
बढ़ें संकल्प ले आगे
वहाँ हर गाम पर अब
चेतना की भैरवी जागे
जहां की धूल चन्दन से भी ज्यादा
महमहाती थी
वहाँ क्या मग्न हो पाये
कभी भी प्यार के धागे

जहाँ गरिमा की बुलबुल
पेड़ की फुनगी पे गाती थी
जहां पर चाँदनी खुद शौर्य की
गाथा सुनाती थी
जहाँ पर सत्य के पंछी
सदा निर्बाध उड़ते थे
जहां पर सत्य की राधा
हमेशा मुस्कुराती थी

कहो वह भूमि अब फिर से
वही अधिमान पायेगी
वहाँ वैभव की फसलें
पूर्व-सी फिर मुस्कुरायेंगी
वहाँ करुणा-पगी ममता का
फिर से नव-सृजन होगा
वहां पर सौम्य-समता का
पुनः शुभ आगमन होगा

यदि यह सब नहीं होगा तो
है निर्माण नाकारा
विषमता मिट न पायी तो
परिश्रम व्यर्थ है सारा
वहां पर अग्रसेनी नीति की
प्रस्थापना करना
परस्पर प्यार पनपाना
बहाना प्रीति की धारा

उस अग्रसेन के माथे पर सूरज खुद तिलक लगाता है

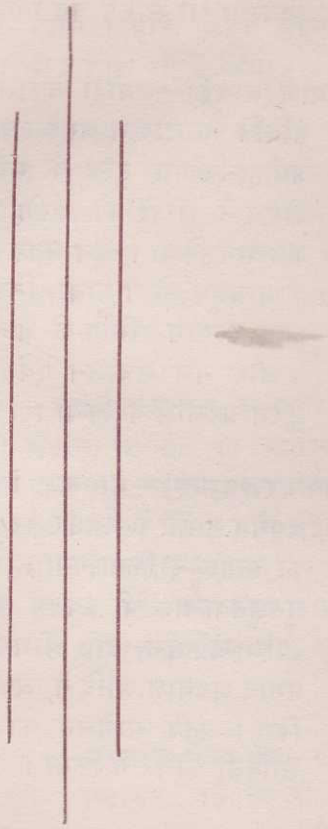

जिसके कृत्यों को बार-बार
इतिहासकार दोहराता है
उस अग्रसेन का जन्म-दिवस
ये सारा विश्व मनाता है

जिसके शासन में समता के
दीपक जलते थे द्वार-द्वार
जिसके शासन में सज-धज के
हर घर में आती थी बहार
वो साम्य योग का शिव शंकर
श्रद्धा से पूजा जाता है

वह अग्रसेन जिसके शासन में
शुभ्र ज्योत्सना जगी रही
वह अग्रसेन जिसके शासन में
गरिमा यश से पगी रही
हर कलाकार उस अग्रसेन के
गर्वित चित्र बनाता है

पी गया विष खुद अग्रसेन
पर अमिय परोसा जन-जन को
अभिषेक किया सद्भावों का
दुत्कार दिया काले धन को
वह अग्रसेन जन-जन के मन में
खुद को स्वयं पुजाता है

वो अग्रसेन जो सत्य-अहिंसा का
प्रहरी था, रखवाला था
वो अग्रसेन जो सदा चरण की
एक धधकती ज्वाला था
उस अग्रसेन के माथे पर
सूरज खुद तिलक लगाता है

उस अग्रसेन की न्याय तुला
दुनिया में उन्नत रही सदा
उस अग्रसेन का सारा जीवन
था गरिमा से लदा-फदा
उस अग्रसेन के साथ हमारा
युगों-युगों से नाता है

उस अग्रसेन के शासन में
थी कहीं गरीबी बसी नहीं
उसके शासन में कहीं किसी ने
अपनी मुट्ठी कसी नहीं
वो अग्रसेन जन मानस में
उत्तम भाव जगाता है

देश भर में अग्रसेन जयंती

(गत अंक से आगे)

अकोला (महाराष्ट्र)—अग्रवाल सेवा समाज अकोला के तत्वाधान में अग्रसेन जयंती का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि के रूप में पधारे अग्रोहा विकास ट्रस्ट की बम्बई क्षेत्रीय समिति के अध्यक्ष श्री सत्य प्रकाश आर्य ने उपस्थित जन-समूह को सम्बोधित करते हुए कहा—हमें अपने अग्रोहे को फिर से इन्द्रप्रस्थ के समान बनाना है। समारोह की अध्यक्षता श्री जी०बी० गोयल ने की।

इलाहाबाद (उ०प्र०)—अग्रवाल युवा संघ, लाल गोपाल गंज के तत्वाधान में 30 सितम्बर 1989 को अग्रसेन जयंती मनाई गई। नन्हें-मुन्ने बालकों ने प्रसंनीय गीत प्रस्तुत किए और वक्ताओं ने एकता पर बल दिया।

बम्बई—अग्रोहा विकास ट्रस्ट की बम्बई क्षेत्रीय समिति द्वारा 2 अक्तूबर 1989 को षण्मुखानंद हाल में भव्य सम्मेलन का आयोजन किया। सम्मेलन का उद्घाटन श्री रामकृष्ण बजाज ने किया। श्री विजय कुमार चौधरी ने सामूहिक विवाह आदि पर जोर दिया। श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने महाराजा अग्रसेन के काल का वर्णन करते हुए अपने कमजोर लोगों की मदद करने का आहवान किया। श्री सुशील कुमार शिन्दे, वित्तमंत्री महाराष्ट्र ने कहा कि समाज से पहले कुटुम्ब को सुधारो। श्री स्वरूप चंद गोयल ने कहा कि हम महिला समिति के सहयोग से मैरिज ब्यूरो, सामूहिक विवाह, शिक्षा तथा चिकित्सा जैसे कार्य करेंगे। इस अवसर पर प्रकाशित 'निर्भय पथिक' पत्रिका को लोग उत्साहपूर्वक खरीद रहे थे सम्मेलन की अध्यक्षता बम्बई समिति के अध्यक्ष श्री सत्य प्रकाश आर्य ने की और मंच का संचालन श्रीमती सावित्री कोचर तथा आभार श्री राजेन्द्र अग्रवाल ने किया। कार्यक्रम की व्यवस्था श्री स्वरूप चंद गोयल ने की।

कल्याण (बम्बई)—अग्रोहा विकास ट्रस्ट की कल्याण समिति की ओर से अग्रसेन जयंती मनाई गई। अग्रोहा-विकास ट्रस्ट के मंत्री श्री स्वरूपचंद गोयल ने लोगों को अग्रोहा यात्रा करने का आहवान किया। इस अवसर पर भारी वर्षा के बावजूद शोभा यात्रा निकाली गई। अध्यक्षता कल्याण समिति के अध्यक्ष श्री सीताराम ने और मंच संचालन एवं आभार मंत्री श्री सुरेश अग्रवाल ने किया।

भायन्दर (बम्बई)—भायन्दर सेवा समिति द्वारा अग्रसेन जयंती के अवसर पर एक कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया। श्री बनवारी लाल झुनझुनवाला, श्री स्वरूप चंद गोयल, डा० श्याम अग्रवाल, डा० श्रीभगवान, श्री जगदीश प्रसाद अग्रवाल आदि ने अपने विचार व्यक्त किए। कवि सम्मेलन का संचालन श्रीमती सावित्री कोचर ने किया।

ठाकुरद्वार (बम्बई)—अग्रवाल सेवा समाज, ठाकुरद्वार द्वारा अग्रसेन जयंती के अवसर पर एक भव्य शोभा यात्रा निकाली गई। कु० रेखा, सुरेख अग्रवाल, महालक्ष्मी तथा ज्ञानचंद गोयल अग्रसेन बने। शोभा यात्रा का संचालन श्री राजेन्द्र अग्रवाल ने किया।

अणुशक्ति नगर (बम्बई)—अणुशक्ति नगर, बम्बई में अग्रोहा विकास ट्रस्ट की घाटकोपर समिति के मंत्री श्री वी० डी० गुप्ता विशेष आमन्त्रित थे।

थाना (बम्बई)—अग्रवाल समाज, थाना की ओर से हिन्दी स्कूल में फैन्सी ड्रेस, नृत्य, जादू के खेल आदि रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए। मुख्य अतिथि श्री पीयूष सिंघल थे। मुख्य वक्ता श्री स्वरूप चन्द गोयल थे। आयोजन की अध्यक्षता श्री श्याम बिहारी लाल अग्रवाल और संचालन श्री अशोक गर्ग ने किया।

बोरीवली (बम्बई)—अग्रवाल सेवा समिति की ओर से अग्रसेन जयंती का भव्य आयोजन किया गया। श्री चन्द्र गुप्ता मुख्य अतिथि थे और अध्यक्ष श्री नटवर लाल गोयल, श्री सरदारी लाल आदि ने अपने विचार प्रकट किए।

बड़वानी (म० प्र०)—अग्रवाल समाज, बड़वानी में 30-9-89 को अग्रसेन जयंती का आयोजन धूम-धाम से किया गया। आरती, झण्डा-गान और अंत में प्रसाद वितरण किया गया। इसी दिन अग्रवाल समाज के चुनाव हुए श्री छम्मन लाल जिन्दल अध्यक्ष और श्री मदन लाल कोषाध्यक्ष और श्री सुरेशचन्द बंसल मंत्री चुने गए।

हरीनगर (नई दिल्ली)—अग्रवाल वैश्य सभा, बी-293, हरी नगर घण्टाघर, नई दिल्ली के तत्वाधान में 14 अक्तूबर 1989 को अग्रसेन जयंती का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि प्रो० जगदीश मुखी (महानगर पार्षद), अध्यक्ष-श्री लक्ष्मीचंद गुप्ता, वक्ता श्री रघुबीर सिंघल (नगर-निगम पार्षद), श्री शिव प्रकाश जी गुप्ता महामंत्री, श्री विष्णु चन्द्र गुप्त, मंत्री सम्मेलन थे।

जयदेवपार्क (नई दिल्ली)—श्री अग्रसेन को-आपरेटिव अ० थ्रीफट् एण्ड क्रेडिट सोसायटी,10/13, जयदेवपार्क, नई दिल्ली के तत्वाधान में अग्रसेन जयंती समारोह का आयोजन 21-10-89 को किया गया। श्री गंगा बिशन की अध्यक्षता में सांस्कृतिक कार्यक्रम एवम् विराट कवि सम्मेल का आयोजन किया गया। 22-10-89 को श्री नन्दकिशोर गर्ग (निगम पार्षद) के कर-कमलों द्वारा सोसायटी के नव-निर्मित भवन का उद्घाटन किया गया। प्रतिभोज के साथ यह कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

रामाकृष्णपुरम (नई दिल्ली)—अग्रवाल परिषद् के तत्वाधान में 21 अक्तूबर 1989 को महाराजा अग्रसेन जयंती समारोह का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि श्री ओमप्रकाश परसराम-पुरिया की अध्यक्षता में विविध प्रकार के सांस्कृतिक एवम् मनोरंजक कार्यक्रम प्रस्तुत किये गए।

सरस्वती विहार (नई दिल्ली)—अग्रवाल सभा, सरस्वती विहार एवम् समीपवर्ती क्षेत्र के तत्वाधान में शारदा निकेतन मंदिर में 22 अक्तूबर 1989 को महाराजा अग्रसेन जयंती समारोह का आयोजन किया गया। अतिथि श्री मंगत राम सिंघल, श्री प्रदीप मित्तल, श्री राजेश यादव, श्री रामेश्वर दास गुप्त आदि ने अपने विचार व्यक्त किए।

शक्ति नगर (दिल्ली)—महाराजा अग्रसेन अग्रवाल आश्रम ट्रस्ट, हरिद्वार के तत्वाधान में 22 अक्तूबर 1989 को शक्ति नगर में महाराजा अग्रसेन जयंती समारोह का आयोजन किया गया। विशिष्ट अतिथि—श्री पुरुषोत्तम गोयल, श्री बंसीलाल चौहान, श्री कुलानंद भारतीय, श्री रामलाल अग्रवाल, श्री श्याम लाल गर्ग, श्री मंगत राम सिंघल, श्री नन्द किशोर गर्ग, श्री नरसिंह दास गुप्ता आदि महानुभावों ने अपने विचार व्यक्त किए। सांस्कृतिक कार्यक्रमों तथा कविता पाठ का आयोजन किया। प्रीतिभोज के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

दाँता (राज०)—अग्रवाल समाज, दाँता की ओर से 30 सितम्बर 1989 को अग्रसेन जयंती मनाई गई। मुख्य अतिथि श्री सांवरमल मोर, अध्यक्ष श्री सीताराम लोहिया जयपुर, विशिष्ट वक्ता श्री नारायण लाल गर्ग थे।

गोन्दिया (महाराष्ट्र)—श्री अग्रसेन स्मारक समिति गोंदिया के तत्वाधान में 24 सितम्बर 1989 से 30 सितम्बर तक अग्रसेन जयंती का आयोजन किया गया। इस अवसर पर विभिन्न खेलों तथा प्रतियोगिताओं जैसे रंगोली, बिन्दी बनाओ, स्टैच्यू, वेशभूषा, मेंहदी आदि प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया।

हैदराबाद—श्री अग्रसेन समिति हैदराबाद के तत्वाधान में 30-9-89 को अग्रवाल हाई स्कूल, पटेल मार्केट के प्रांगण में अग्रसेन जयंती का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि श्री आर० डी० अग्रवाल ने ध्वजारोहण किया। सांय 6.30 बजे कुली कुतुबशाह स्टेडियम में श्री नन्दकिशोर जालान ने समारोह का उद्घाटन किया। आन्ध्र प्रदेश के गृहमंत्री माननीय श्री ए० रेड्डी मुख्य अतिथि के रूप में पधारे।

जबलपुर (म० प्र०)—जबलपुर अग्रवाल सभा के तत्वाधान में 23 सितम्बर से 30 सितम्बर 1989 तक महाराजा अग्रसेन जयंती समारोह का आयोजन किया। ध्वन-पूजन, स्कूटर रैली, पाक-कला, मेंहदी, वाद-विवाद, पेंटिंग आदि प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। विराट कवि सम्मेलन के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। प्रभात फेरी तथा शोभा यात्रा भी निकाली गई।

जालना (महाराष्ट्र)—अग्रवाल सेवा समिति, जालना की ओर से अग्रसेन जयंती समारोह का आयोजन किया। अग्रोहा विकास ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री सुभाष गोयल मुख्य अतिथि के रूप में पधारे। श्री सुभाष गोयल ने आह्वान किया कि सभी बन्धुओं को अग्रोहा के विकास में जुट जाना चाहिए। इस अवसर पर विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों का प्रदर्शन किया गया। श्री गोयल ने विजेता बच्चों को पुरस्कार वितरित किए।

लाडनू (राज०)—श्री अग्रवाल सभा, लाडनू के तत्वाधान में 30 सितम्बर 1989 को अग्रसेन जयंती समारोह का आयोजन किया गया। श्री रामनिवास धनावत ने अध्यक्षता की। शानदार शोभा यात्रा निकाली गई। सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

मनियावाला (उ० प्र०)—30 सितम्बर 1989 को अग्रसेन जयंती का आयोजन सनातन धर्म पुस्तकालय में किया गया। श्री धमेन्द्र कुमार अग्रवाल ने ध्वजारोहण किया। प्रभात फेरी के पश्चात् खेलों का आयोजन किया गया। उत्सव की अध्यक्षता श्री राजेश्वर कुमार मित्तल ने की।

नोहर (राज०)—महाराज अग्रसेन जयंती के उपलक्ष्य में 30 अक्तूबर 1989 को प्रातः प्रभात फेरी एवं सायंकाल शोभा यात्रा निकाली गई। बाजारों को सजाया गया। मकानों व दुकानों पर रोशनी की गई। दूसरे दिन सांस्कृतिक कार्यक्रम एवम् विचार गोष्ठी श्री गणेशी लाल गर्ग की अध्यक्षता में की गई। मुख्य अतिथि श्री दुर्गादत्त बदरिया थे।

राजगंगापुर (उड़ीसा)—अग्रसेन जन कल्याण समिति, राजगंगापुर के तत्वाधान में 30 सितम्बर 1989 को श्री मारवाड़ी पंचायती धर्मशाला में अग्रसेन जयंती का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि श्री मोहनलाल चांद थे।

(शेष पृष्ठ 72 पर)

विवाह विभाग

नियम

1. **'मंगल-मिलन'** का आजीवन शुल्क 200/- रु० या वार्षिक शुल्क 20/- रु० मनीआर्डर द्वारा इस पते पर भेजें। 'मंगल-मिलन' डी-36, साउथ एक्सटेंशन भाग-1, नई दिल्ली-110049। इसे वी० पी० पी० से भेजने का प्राविधान नहीं है। मनीआर्डर के कूपन पर अपना नाम-पता साफ-साफ **लिखें**। सदस्यता के लिए अलग से फार्म नहीं है। सदस्यता वर्ष के किसी भी महीने से शुरू की जा सकती है।
2. शुल्क पोस्टल आर्डर अथवा चैक द्वारा न भेजें। केवल नकद, मनीआर्डर अथवा बैंक ड्राफ्ट द्वारा भेजें।
3. **'मंगल-मिलन'** में विवाह योग्य लड़के-लड़कियों के विवरण नि:शुल्क प्रकाशित किये जाते हैं। नि:शुल्क प्रकाशित करने के लिए उसका आजीवन अथवा वार्षिक सदस्य बनना अनिवार्य है दो बार से अधिक बार प्रकाशित करने के लिये 20/-रु० प्रति बार लिए जाते हैं।
4. **'मंगल-मिलन'** में वे ही विवरण प्रकाशित किये जायेंगे जो विवरण-फार्म पर भरकर भेजे जायेंगे। विवरण-फार्म मंगवाने के लिये कृपया जवाबी डाक टिकट अथवा लिफाफा अवश्य भेजें। 20 तारीख तक प्राप्त होने वाले वैवाहिक विवरण आगामी अंक में प्रकाशित कर दिये जाते हैं 20 तारीख के बाद प्राप्त होने वाले विज्ञापन उससे आगामी अंक के लिये संभाल कर रख लिये जाते हैं।
5. भेजा गया विवरण कब छपेगा तथा उसका क्रमांक क्या होगा इसकी जानकारी चाहिये तो विवरण फार्म के साथ पता लिखा जवाबी पोस्टकार्ड अथवा लिफाफा अवश्य भेजें।
6. लड़कों के विज्ञापन पिता, बड़े भाई या उनके संरक्षक द्वारा अनुमोदित होने पर ही प्रकाशित किये जायेंगे।
7. विवरण तथा पत्र आदि **हिन्दी भाषा** एवं **देवनागरी लिपि** में ही भेजें और **कृपया** साफ-साफ **लिखें**।
8. इसमें व्यापारिक विज्ञापन प्रकाशित नहीं किये जाते।
9. **'मंगल-मिलन'** से पत्र-व्यवहार करते समय अपनी सदस्य-संख्या अवश्य **लिखें**।
10. **'मंगल-मिलन'** प्रति मास 8 ता० को प्रकाशित हो जाता है। यदि आपके पास पत्रिका 20 तारीख तक न पहुँचे तो कृपया सूचित करें।
11. **ग्राहक** अपने पते में तबदीली कराने के लिए 5/-रु० अपने **नये** और पुराने पते सहित भेजें।

विवाह योग्य लड़कों की सूची

2643. वर 28 गोयल, अंडर ग्रेजुएट, 162 सें० मी०, साफ, 55 किलो, सर्विस, (टिकट विक्रेता), आय—1400+650/-रु०, तीन भाई, एक विवाहित, एक बहन, विवाहित, पिता की सरकारी सर्विस, आय—2700/-रु०, हरियाणा निवासी, पता—श्री जगदीश शरण गोयल, डी०-32, मोती बाग-एक, नई दिल्ली-21 (कार्यरत, ग्रहणी, सुशील)

2658. वर 28 गर्ग (मंगली), इन्टर, 177 सें० मी०, गेहुंआ, 60 किलो, प्रोविजन स्टोर, आय—3000/-रु०, एक भाई, तीन बहनें, दो विवाहित, पिता नहीं, पता—श्रीमती सरला गुप्ता, डब्ल्यू जैड०-567, गली नं० 1, श्रीनगर, शकूरबस्ती, रानी बाग, दिल्ली (घरेलू, सुन्दर, शिक्षित, गृहकार्य दक्ष, मंगली)

2672. वर 25 गोयल, बी०ए०, 168 सें०मी०, गेहुंआ, 57 किलो, दाल का निजी व्यापार, आय—7000/-रु०, एक भाई, दो बहनें, सभी विवाहित, पिता ग्रेन मर्चेंट, आय—3000/-रु०, पता—श्री रामसरन गोयल, मैसर्स-शक्ति दाल मिल, लक्ष्मीगंज, कासगंज (गृहकार्य दक्ष, सुन्दर, शिक्षित)

2691. वर 23 तायल (मंगली), इन्टर, 176 सें०मी०, साफ, 58 किलो पिता के साथ अपना स्वीट हाउस, आय—5000/-रु० एक भाई, तीन बहनें, सभी विवाहित, पता—श्री सेवाराम तायल, राजीवकुमार, गाँधी चौक, शामली, मु०नगर-247776 (लम्बी, सुन्दर, स्वस्थ, शाकाहारी, घरेलू)

2774. वर 25 सिंहल, एम०काम०, 175 सें०मी०, साफ, 80 किलो, सर्विस (स्टैनो), आय—2200/-रु०, +पर्कस, एक भाई, एक बहन, दोनों विवाहित, पिता की सर्विस, पारिवारिक आय—10,000/-रु०, यू० पी० निवासी, पता—श्री देवप्रकाश गुप्ता, सी-409, विकासपुरी, नई दिल्ली-18 (फोन-504126/कम्प्यूटर) (टीचर, सरकारी या बैंक सर्विस)

2790. वर 30 गोयल, नवीं, 171 सें० मी०, गेहुंआ, 55 किलो, प्राइवेट सर्विस एवं निजी व्यवसाय, आय—आय-2500/रु०, पांच भाई, दो विवाहित, चार बहनें, तीन विवाहित, पिता की जनरल मर्चेंट की दुकान, आय-2000/-रु०, पता—श्री कल्याणचन्द्र गोयल, दो-सी-217, नेहरू नगर, गाजियाबाद (सर्विस या घरेलू)

2791. वर 25 तायल, बी०एस-सी०, डी० फार्मेसी, बी-फार्मेसी (चतुर्थ वर्ष), 179 सें०मी०, गेहुंआ, 65 किलो, शीघ्र मैडिकल स्टोर खोलेगे, तीन बहनें, एक विवाहित, पिता—की सरकारी सर्विस, आय—5500/-रु०, सहारनपुर निवासी पता—डा० सी० एल० गुप्ता, वरिष्ठ वैज्ञानिक अधिकारी, ठोस अवस्था भौतिकी प्रयोगशाला (रक्षा मंत्रालय), लखनऊ रोड, तिमारपुर, दिल्ली (शिक्षित, कुलीन, सुन्दर, सभ्य)

2792. वर 26½ गोयल, बी० ए०, 175 सें० मी०, सांवला, 65 किलो, व्यवसाय, आय—4000/-रु०, तीन भाई, दो बहनें, सभी विवाहित, पिता का व्यवसाय, आय—5000/-रु०, जिला जयपुर निवासी, पता—श्री रविन्द्र अग्रवाल, 2468, नलवा गली, चूना मंडी, पहाड़गंज, नई दिल्ली-55

2793. वर 25 गर्ग, ए०एम०आई०ई० (सिविल इंजीनियरिंग), 162 सें०मी०, गोरा, 50 किलो, सरकारी सर्विस (जूनियर इंजीनियर), आय—2450/-रु०, एक भाई, (जयपुर में इंजीनियर) एक बहन, दोनों विवाहित, पिता की सरकारी सर्विस, आय—3200/-रु०, मेरठ निवासी, पता—श्री राजीव गुप्ता, जी-507, श्रीनिवासपुरी नई दिल्ली (गोरी, पतली, बी० ए० बी०एड० एम०ए०)

2794. वर 27 गोयल, दसवीं, रैफ्रिजरेशन एवं एयर कंडीशनिंग में डिप्लोमा, 163 सें०मी०, गेहुँआ, 52 किलो, टैक्निशियन, आय-1500/रु०, एक भाई, दो बहनें, सभी विवाहित, पिता नहीं, जिला कुरुक्षेत्र निवासी, पता—श्री सुनील गुप्ता, 498-एल, माडल टाऊन, करनाल (हरियाणा) (सरकारी सर्विस)

2795. वर 23½ सिंगल, बी० टैक० (आनर्स) इलैक्ट्रोनिक्स, 172 सें० मी० गेहुँआ, 50 किलो, इंजीनियर, आय—3150/-रु०, तीन बहनें, विवाहित, पिता फैक्टरी में भागीदार, आय—3500/-रु०, पता—श्री जे०पी०संगल, पार्टनर, अशोका इंडस्ट्रीज, इंडस्ट्रीयल, एस्टेट, रुड़की, जिला—हरिद्वार (फोन-2528) (सुन्दर, गौरवर्ण स्नातक, सम्मानित अग्रवाल परिवार)

2796. वर 25 गोयल, इंटरमीडियेट, 174 सें०मी०, साफ, 51 किलो, अपनी सोडा वाटर फैक्टरी, आय—2000/-रु०, एक भाई, तीन बहनें, दो विवाहित, पिता की अपनी प्रोपर्टी से आय—2000/-रु०, पता—श्री किशनचंद गोयल, 42, ऊँचा कुँआ, राजपूताना, रुड़की, जिला हरिद्वार

विधुर/परित्यक्त

2749. विधुर 35 जिंदल (पूर्व पत्नी से 3 वर्षीय दो जुड़वा लड़कियाँ एक नाना के पास, एक हमारे पास), बी० एस० सी०, डिप्लोमा इन वैलफेयर एण्ड पर्सनल मैनेजमैंट, एम० बी० ए० कर रहे, 173 सें० मी०, साफ, 70 किलो, केन्द्रीय अंडरटेकिंग में रीजनल मैनेजर, आय—4500/-रु०, तीन भाई, एक विवाहित, माता नहीं, पिता रिटायर्ड, अपना इलैक्ट्रोनिक्स व्यापार, दिल्ली में अपने फ्लैट्स तथा कार आदि, जगाधरी निवासी, पता—श्री शिवप्रसाद जिन्दल, आर० पी० एस० फ्लैट्स, शेख सराय, फेस-1, नई दिल्ली-17 (स्नातक, सुन्दर, लम्बी, कुँवारी या निःसंतान, विधवा या तलाकशुदा)

2761. परित्यक्त निःसंतान 30, गर्ग, 176 सें०मी०, 67 किलो, ट्रेनिंग कोर्डीनेटर (दिल्ली प्रशासन), आय—3050/-रु० दिल्ली में सरकारी फ्लैट, नवम्बर 88 में विवाह, दिसम्बर 88 में आपसी सहमति से संबंध विच्छेद, अलीगढ़ में पारिवारिक दो-मंजिला कोठी तथा मार्किट, पांच भाई, तीन विवाहित, पता—श्री डी० एन० अग्रवाल, 6, स्टेट बैंक कालोनी, मैरिस रोड, अलीगढ़ (अविवाहित, सुन्दर, घरेलू, अध्यापिका)

विवाह योग्य लड़कियों की सूची

778. कन्या 27 सिंघल, बी० काम० (आनर्स), सी० ए० (इंटर) चश्मा लगाती है, 158 सें० मी०, गेहुंआ, 55 किलो, दो भाई, आठ बहनें, सभी विवाहित, माता व पिता नहीं, राजस्थान निवासी, पता—श्री गोकुलचंद अग्रवाल, 4726/21, दरियागंज, नई दिल्ली (फोन-272173)

779. कन्या 27½ एवं 25½, 140 सें० मी०, सुन्दर, तथा सुशिक्षित, अंग्रेजी हिन्दी एकाउन्ट लेखन का

780. पूर्ण ज्ञान, 45 किलो एवं 53 किलो, एक पाँव से विकलांग मगर चलने-फिरने में सक्षम। एक भाई, विवाहित, एक बहन, विवाहित, पिता पाट एवं शेयर का व्यवसायी पता—श्री श्यामलाल जालान, श्री अग्रसेन स्मृति भवन, पी०-30-ए०, कलाकार स्ट्रीट, कलकत्ता-7

781. कन्या 26 बंसल, बारहवीं पास, 159 सें०मी०, गेहुंआ, 40 किलो, सर्विस (टी०वी० मैकेनिक), आय—800/रु०, एक बहन, विवाहित, जिला मुरादाबाद निवासी, पता—श्रीमती शोभा रानी गर्ग, 10-बर्फ वाली गली, देहली गेट, गाजियाबाद (सरकारी कर्मचारी, तलाकशुदा भी विचारणीय)

782. कन्या 23 गर्ग (मंगलीक), बी० ए०, पी० जी० डिप्लोमा इन कम्प्यूटर, 155 सें०मी०, गेहुंआ, 50 किलो, एक बहन, माता अध्यापिका, पिता की सरकारी नौकरी, आय—3000/-रु०, पता—श्री आनन्द भूषण, सी-8/163, यमुना विहार, दिल्ली-53 (सरकारी/अर्ध सरकारी सर्विस)

783. कन्या 22 बंसल, बी०एस०सी० (गणित), 152 सें०मी०, साफ गोरा, 42 किलो, पाँच भाई, तीन विवाहित, एक बहन, पिता का कपड़ा एवं जनरल इलैक्ट्रीकल का व्यापार, आय—4000/-रु०, पन्ना निवासी, पता—श्री बी०एल० सराफ 40, मिनी एम० आई० जी०, गोविन्दपुर कालोनी, इलाहाबाद (शिक्षित, सभ्य, धार्मिक, शाकाहारी)

784. कन्या 22½ गर्ग, बी०ए०, 144 सें०मी०, गेहुंआ 38 किलो, अपना व्यवसाय, (साड़ी की दुकान), आय—1500/-रु०, एक भाई, चार बहनें, दो विवाहित, पिता का अपना व्यवसाय, आय—5000/- रु०, भिवानी निवासी, पता—श्री लछमनदास अग्रवाल, म०नं० 2620, सैक्टर-7 ए, फरीदाबाद (अपने पैरों पर खड़ा, प्रतिष्ठित परिवार)

785. कन्या 27 गोयल, बी०एस० सी०, एम० ए०, पी०जी० डिप्लोमा कम्प्यूटर प्रोग्रामिंग, 156 सें०मी०, साफ, 46 किलो, सरकारी सर्विस, (तकनीकी), आय—2500/-रु०, छः भाई, दो विवाहित, तीन बहनें, विवाहित, पिता की जनरल मर्चेन्ट की दुकान, आय—2000/-रु०, पता—श्री कल्याणचन्द्र गोयल, दो-सी-217, नेहरू नगर, गाजियाबाद (सर्विस या व्यवसायी)

786. कन्या 25 सिंहल, एम० ए० (सोशियोलोजी), 152 सें०मी०, गोरा, 48 किलो, एक भाई, एक बहन, विवाहित, पिता एडवोकेट, आय—5000/-रु०, अलीगढ़ निवासी, पता—श्री पी० पी० सिंहल, एडवोकेट, आर०ए० 4, शुगर फैक्ट्री कम्पाउंड, सिविल लाइन्स, रामपुर (उ०प्र०) (सुशिक्षित, इंजीनियर, पी० ओ० सी०ए० अथवा प्राइवेट व सरकारी प्रतिष्ठान में अफसर)

787. कन्या 20 गोयल, एम०ए० प्रथम में अध्यनरत, 157 सें०मी०, गोरा, 42 किलो, दो भाई, दो बहनें, एक विवाहित, पिता सरकारी अधिकारी, आय—3500/-रु०, हरियाणा/राजस्थान निवासी, पता—श्री एच० सी० गोयल, फोरमैन, क्वार्टर-पी० ए०/चार/26, साउथ एस्टेट, आर्डिनेन्स फैक्टरी, मुरादनगर जि० गाजियाबाद (फोन-8710721) (बैंक या सरकारी नौकरी)

788. कन्या 22 तायल, मैट्रिक, 158 सें० मी०, सुन्दर, एक भाई, एक बहन, पिता सी० ए०, खुद की प्रेक्टिस, आय—4000/- रु०, हाथरस निवासी, पता—श्री बालकृष्ण अग्रवाल, बी० के० अग्रवाल एंड कम्पनी, 11, पोलक स्ट्रीट, प्रहलादपुरा, कलकत्ता-700001 (शिक्षित, आत्मनिर्भर, व्यवसायी, प्रोफेशनल, मंगली, कलकत्ता निवासी)

789. कन्या 19½ गर्ग, बी० ए०, 150 सें० मी०, साफ, 50 किलो, दो भाई, एक बहन, पिता का व्यापार, आय—4000/- रु०, मालेर कोटला निवासी, पता—श्री एफ० सी० जैन, कोठी नं० 501, अर्बन एस्टेट, फेस-1, डुगरी रोड, लुधियाना (पंजाब) (सर्विस या व्यापारी)

790. कन्या 21 मंगल, एम० ए०, (फाईन आर्टस), 155 सें० मी०, गेहुंआ, 42 किलो, एक भाई, एक बहन, पिता की सरकारी सर्विस, आय—4000/- रु०, मेरठ निवासी, पता—श्री एम० पी० गुप्ता, 342, पटेल नगर, नई मंडी, मुजफ्फरनगर (उ० प्र०)

नई दिल्ली पोस्ट० रजि० D (SE)-071
रजि० नं० 23953/73

भारत माता मंदिर, हरिद्वार
में
महाराजा अग्रसेन की प्रतिमा की प्रतिष्ठा

अत्यन्त हर्ष का विषय है कि पावन गंगा के तट सप्त सरोवर पर स्थित भारत माता मन्दिर हरिद्वार में कार्तिक पूर्णिमा, सोमवार तदानुसार 13 नवम्बर 1989 को महाराजा अग्रसेन की प्रतिमा की प्रतिष्ठा होगी। स्वामी सत्यमित्रानन्द गिरि जी महाराज के सानिध्य में एवम् अनेक संत-महात्माओं की पावन उपस्थिति में उत्सव सम्पन्न होगा।

प्रतिमा प्रतिष्ठा अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन के अध्यक्ष एवं हरियाणा के उपमुख्यमंत्री माननीय श्री बनारसी दास गुप्त के कर-कमलों द्वारा होगी।

इस पत्र द्वारा आपसे अनुरोध है कि सपरिवार हरिद्वार पहुँचकर उत्सव में सम्मिलित होकर गरिमा प्रदान करें।

कार्यक्रम

भण्डारा : संत-महात्माओं का भण्डारा प्रातः 11.00 बजे भारत माता मंदिर में होगा।

प्रीतिभोज : प्रातः 11.00 बजे से दोपहर बाद एक बजे तक अग्रसेन अग्रवाल आश्रम में होगा।

शोभा-यात्रा : 2.00 बजे अग्रसेन अग्रवाल आश्रम से आरम्भ होगी।

मूर्ति प्रतिष्ठा समारोह : सायं 4.00 बजे, भारत भाता मंदिर में आरम्भ होगा और सायं 4.30 बजे प्रसाद वितरण के साथ सम्पन्न होगा।

(पृष्ठ 68 का शेष)

शिकारपुर (उ०प्र०)—शिकारपुर (जि०बुलन्दशहर) उ०प्र० की अग्रवाल सभा की ओर से आयोजन किया गया। इस अवसर पर महाराजा अग्रसेन की शोभा यात्रा का आयोजन किया गया। पुरस्कार वितरण का समारोह सम्पन्न हुआ।

सूरत (गुजरात)—अग्रोहा विकास ट्रस्ट की सूरत समिति द्वारा अग्रसेन जयंती का आयोजन किया गया। विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों एवम् प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि के रूप में बम्बई समिति के कोषाध्यक्ष श्री रामरिच्छपाल पधारे। अध्यक्षता श्री भालचन्द ने की। मंच का संचालन श्री बी० एस० अग्रवाल ने किया। श्री रामरिच्छपाल ने पुरस्कार वितरण किया।

मंगल-मिलन
डी-36, साउथ एक्सटेंशन भाग-1,
नई दिल्ली-110049

प्रकाशक : रामावतार गुप्त के लिए राज प्रिंटर्स H-31 A, नबीन शाहदरा दिल्ली-110032 में मुद्रित
स्वत्वाधिकारी : रामेश्वर दास गुप्त धर्मार्थ ट्रस्ट, डी-36, साउथ एक्सटेंशन भाग-1, नई दिल्ली-1100049